ॐ श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

15 जुलाई 2004

वर्ष 24 अंक 9

प्रेम प्रकाश संदेश





पुरूषोतम-मास

18 जुलाई से 16 अगस्त 2004

वार्षिक शुल्क :– रू. 50 (भारतवर्ष में), रू 350 (विदेश में)

पुरूषोत्तम-मास के व्रत नियम

अधिमासको 'मलमास' और पुरूषोत्तम-मास' भी कहते हैं. इस मासकी मलमासकी दृष्टि से जैसे निन्दा है, पुरूषोत्तन-मासकी दृष्टि से इसकी बड़ी महिमा है. भगवान पुरूषोत्तम ने इसको अपना नाम देकर कहा है कि अब मैं इस मास का स्वामी हो गया हूं और इसके नाम से सारा जगत पवित्र होगा तथा मेरी सादृश्यता को प्राप्त करके यह मास अन्य सब मासों का अधिपति होगा. यह जगत्पूज्य और जगत का वन्दनीय होगा और यह पूजा करने वाले सब लोगों के दारिद्रयका नाश करनेवाला होगा.

इस पुरूषोत्तम-मास में नियम से रहकर भगवान की विधिपूर्वक पूजा करने से भगवान् अत्यन्त प्रसन्न होते हैं और भक्तिपूर्वक उन भगवानकी पूजा करने वाला यहां सब प्रकार के सुख भोगकर मृत्यु के बाद भगवान के दिव्य गोलोक में निवास करता है.

तीर्थों में, घरों में और मन्दिरों में जगह-जगह इस मास में भगवान की कथा होनी चाहिये. भगवान का विशेष रूप से पूजन होना चाहिये और भगवान की कृपा से देश तथा विश्व का मंगल हो एवं गो-ब्राह्मण तथा धर्मकी रक्षा हो, इसके लिये व्रत-नियमादिका का आचरण करते हुए दान, पुण्य और भगवान का पूजन करना चाहिये. महर्षि वाल्मीकि ने पुरूषोत्तम मास के नियमों के सबंध में कहा है कि इस मास में गेहूं, चावल, सफेद धान, मूंग, जौ, तिल, मटर, बथुआ, शहतूत, सामक, ककड़ी, केला, घी, कटहल, आम, हर्रे, पीपल, जीरा, सोंठ, इमली, सुपारी, आंवला, सेंधा नमक आदि हविष्यान्नका भोजन करना चाहिये.

सब प्रकार के अभक्ष्य, मांस, शहद, चावलका मांड़, चौलाई, उरद, राई, नशेकी चीजें, दाल, तिल का तेल और दूषित अन्न का त्याग करना चाहिये. किसी प्राणी से द्रोह नहीं करना चाहिये. पर-स्त्रीका भूल करके भी सेवन नहीं करना चाहिये. देवता, वेद, ब्राह्मण, गुरू, गाय, साधु-सन्यासी, स्त्री और बड़े लोगों की निन्दा नहीं करनी चाहिये. तांबे के बर्तन में गाय का दूध, चमड़े में रखा हुआ पानी और केवल अपने लिये ही पकाया हुआ अन्न दूषित माना गया है अतएव इनका त्याग करना चाहिये.

इस'पुरूषोत्तम-मास' में जमीन पर सोना, पत्तल में भोजन करना, शाम को एक वक्त खाना, रजस्वला स्त्री से दूर रहना और धर्म भ्रष्ट संस्कारहीन लोगों से सम्पर्क नहीं रखना चाहिये. प्याज, लहसुन, नागरमोथा, छत्री, गाजर, मूली इत्यादि का त्याग करना चाहिये. चान्द्रायणादि व्रत-उपवास करना उत्तम है.

प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व उठकर शौच, स्नान, संध्या आदि अपने-अपने अधिकार के अनुसार नित्यकर्म करके भगवान का स्मरण करना चाहिये और पुरूषोत्तम-मास के नियम ग्रहण करने चाहिये. पुरूषोत्तम-मास में श्रीमद्भागवत का पाठ करना महान् पुण्यदायक है और एक लाख तुलसीपत्र से शालग्राम भगवान का पूजन करने से अनन्त पुण्य होता है.

विधिपूर्वक षोडशोपचार से नित्य भगवान का पूजन करना उचित है. इस पुरूषोत्तम-मास में-

गोवर्द्धनधरं वन्दे गोपालं गोपरूपिणम्.
गोकुलोत्सवमीशानं गोविन्दं गोपिकाप्रियम्..

इस मन्त्र का एक महीने तक भक्तिपूर्वक बार-बार जप करने से पुरूषोत्तम भगवान की प्राप्ति होती है. प्राचीन काल में श्री कौण्डिन्य ऋषि ने यह मंत्र बताया था. मंत्र जपते समय नवीन मेघश्याम द्विभुज मुरलीधर पीतवस्त्रधारी श्रीराधिकाजी के सहित श्री पुरूषोत्तम भगवान का ध्यान करना चाहिये.

वास्तव में श्रद्धाभक्तिपूर्वक भगवान का नाम जप, स्थान-स्थान में भगवन्नामकीर्तन, गोरक्षा के लिये दान, विधवा अनाथ-असहाय लोगों की निष्काम सेवा, धार्मिक आचरणों का पालन-इस मास में विशेष रूप से करना चाहिये. ♦

ॐ श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र
अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

प्रेम प्रकाश संदेश

वर्ष 24 | 15 जुलाई 2004 | अंक 9

मंगल आशीष

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज
सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज

संस्थापक

सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षण–मार्गदर्शन

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिए –	50 रू.	350 रू.
तीन वर्ष के लिए –	140 रू.	1000 रू.

मूल्य एक प्रति 5 रूपए

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए.

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र–व्यवहार के लिए पता :–

व्यवस्थापकः– प्रेम प्रकाश संदेश,
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर ग्वालियर–474001
फोन नं.–0751–2454183

अनुक्रम

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति गुरूवार, शनिवार व रविवार प्रातः 8 से 12 बजे व सायं 5 से 8 बजे तक प्रेम प्रकाश सदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए शुल्क जमा किया जा सकता है.

बाली सम्मेलन

संकल्प की बेला

मिलो मिलावो मिल रहो, मिलो तो मेला होय.
आत्म अन्तर जो मिले, मेला कहिये सोय.

रामायणयुगीन प्रसिद्ध और पवित्र नगरी बाली वर्तमान इण्डोनेशिया में मंगलमूर्ति आचार्य गुरूवर स्वामी टेऊँरामजी महाराज की अपार कृपा एवं पूज्य गुरूजनों गुरूवर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, गुरूवर स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज एवं गुरूवर स्वामी हरिदासरामजी महाराज के शुभ आशीष से प्रेम प्रकाश मण्डल के वर्तमान अध्यक्ष तपोधन, प्रेममूर्ति, ज्ञान स्वरूप पूज्यपाद गुरूवर महाराज श्री स्वामी भगत प्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में आयोजित प्रथम प्रेम प्रकाशी मेल-मिलाप सम्मेलन के पावन अवसर पर प्रेम प्रकाश संदेश परिवार विश्व के कोने-कोने में निवास कर रहे प्रेम प्रकाशियों की ओर से पूज्य महाराज श्री को दण्डवत् प्रणाम-सम्मेलन में उपस्थित एवं मानसिक रूप से सम्मेलन में सम्मिलित सभी प्रेम प्रकाशी प्रेमियों का हार्दिक अभिनन्दन करता है.

बाली (इण्डोनेशिया) में प्रथम मेल–मिलाप शिविर अवसर पर सम्पादकीय अग्र लेख

जब से उक्त सम्मेलन के आयोजन का समाचार मिला है तभी से हृदय को विभिन्न विचारों ने आ घेरा कि किस तरह इस प्रथम सम्मेलन के आयोजन के उद्देश्य को एक ऐसे संकल्प का रूप प्रदान करें जिससे यह सम्मेलन एक धरोहर के रूप में हृदय पटल पर सदा के लिए अंकित हो जाये.

दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा मनुष्य शीघ्र अपने जीवन में परिवर्तन लाकर अपने समाज एवं देश को उन्नत एवं सुखमय बना सकता है. जिन्होंने संकल्प शक्ति के महत्व को समझा है उनके लिये यह बात समझना बहुत आसान है. अतः किसी भी धार्मिक कार्य के प्रारंभ एवं अंत में एक शुभ संकल्प लिया जाता है. इसी तारतम्य में हमारा विनम्र निवेदन है कि उक्त सम्मेलन के अंत में प्रत्येक व्यक्ति अपने हृदय में एक-एक शुभ संकल्प लेकर अगले सम्मेलन तक उस संकल्प को व्यवहार में उतारने का प्रयास करें. संकल्प कोई भी हो सकता है यह व्यक्तियों की इच्छा शक्ति पर निर्भर करता है उदाहरणार्थ-

अपने बुजुर्गों की सेवा करने का संकल्प लें

जैसा कि आज कल वृद्धाश्रम संस्कृति बहुत तेजी से पनप रही है. बच्चे अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करने के बजाय उन्हें वृद्धाश्रम में रहने को मजबूर कर रहे हैं. परन्तु वे यह नहीं जानते कि वृद्धाश्रम में रह रहे उनके ही बुजुर्गों को अपने परिजनों से बिछुड़ने का दर्द कितना व्यथित कर देता होगा.

कुछ वर्ष पूर्व मुझे हरिद्वार में एक वृद्धाश्रम के उद्घाटन समारोह में सम्मिलित होने का अवसर मिला. उस वृद्धाश्रम का उद्घाटन करने हेतु पधारे परम पूज्य महामण्डलेश्वर जी ने उपस्थित जन समुदाय से बड़े ही विनम्रतापूर्वक कहा था कि-मुझे इस वृद्धाश्रम का उद्घाटन करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है, परन्तु इससे भी अधिक प्रसन्नता तब होती जब आप अपने क्षेत्र के बच्चों को अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करने को प्रेरित करते जिससे बच्चे अपने वृद्ध माता-पिता को वृद्धाश्रम की बजाय स्वयं के पास रखकर उनकी सेवा करने को तत्पर रहते.

सेवा का महत्व आप लोग जानते नहीं या जानकर भी अनजान बने रहते हैं. जो लोग अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा में संलग्न रहने के कारण कोई भी शुभ कार्य, तीर्थयात्रा इत्यादि नहीं कर पाते हैं, परिणामस्वरूप तीर्थ उनके घरों पर निवास करने आते हैं. यह बात निम्न उदाहरण से भलीभांति स्पष्ट हो जाती है, चाहिए तो केवल भरोसा? कथा का स्मरण भी एकाएक इस कारण से हो आया क्योंकि आज आषाढ़ मास की एकादशी का पवित्र दिन है और इसी दिन पंडरपुर में लाखों श्रद्धालु, भक्त नामदेव एवं संत ज्ञानेश्वर जी की चरण पादुकाओं की पालकी लेकर पंडरीनाथ जी के दर्शन हेतु पंडरपुर पहुंचे हैं. इस कारण पंडरीनाथजी की कथा का स्मरण हो आया. कथा इस प्रकार है-

पण्डुरनाथ-(श्रीपुण्डरीकनाथजी)- मातृ-पितृ भक्त पुण्डरीक को दर्शन देने के लिए भगवान आये और भक्त

की प्रार्थना पर वहीं अविचलरूप से रह गये अतः भगवान का नाम ही पड़ गया-श्रीपुण्डरीकनाथजी. कथा इस प्रकार है-श्री पुण्डरीकजी का जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ था. सभी शास्त्रों का सम्यक् ज्ञान था. साधना में बड़ी अभिरूचि थी. निरन्तर जप-तप तीर्थाटनादि में लगे रहते थे. एक बार ये अपने वृद्ध माता-पिता को घर पर छोड़कर सपत्नीक तीर्थयात्रा करते हुए काशीपुरी पहुंचे. एक पण्डाके यहां रूके हुए थे. वे पण्डाजी बड़े ही मातृ-पितृ भक्त थे. रात्रि के समय श्रीपुण्डरीकजीने देखा कि कुछ दिव्यस्वरूप वाले स्त्री-पुरूषों का समुदाय उन पण्डाजी के घर आया. प्रथम तो सबने उनका दर्शन किया, तत्पश्चात् सब लोग सेवा में लग गये. कोई जल छिड़कने लगा, कोई बुहारी लगाने लगा, कोई घर में जल भरने लगा, कोई कुछ एवं कोई कुछ कैकंर्य करने लगा. यह सब देखकर पुण्डरीकजी को बड़ा आश्चर्य हुआ. अतः ये उनके समीप जाकर बड़ी विनम्रतापूर्वक पूछे -यदि आप लोग मुझे अधिकारी समझें तो कृपा करके यह बतायें कि दिव्यरूपधारी आप लोग कौन हैं? और इतने तेजस्वी होकर भी आप लोग यहां यह सब कैकंर्य क्यों करते हैं? सबने अपना परिचय दिया-हम गंगा हैं, हम जमुना हैं, हम सरस्वती हैं, हम अमुक देवी हैं और हम अमुक देव हैं. हम लोग इन पन्डाजी की मातृ-पितृ भक्ति से प्रसन्न होकर इनका दर्शन करने आते हैं और इनकी सेवा कर अपने को कृतार्थ मानते हैं.

माता-पिता की सेवा की यह अद्‌भुत महिमा देखकर श्रीपुण्डरीकजी को बड़ी ही आत्म-ग्लानि हुई कि हमारी भूल तो देखो-हम अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा छोड़कर जप, तप, तीर्थ-योग-यज्ञ में लगे हैं. फिर तो श्रीपुण्डरीकजी उनपण्डाजी को प्रणाम कर उसी रात्रि घर के लिए प्रस्थान कर लिए और घर आकर प्राण-प्रण से माता-पिता की सेवा में जुट गये.श्री पुण्डरीकजी की मातृ-पितृ भक्ति से प्रसन्न होकर स्वयं भगवान ने इन्हें दर्शन देने एवं ऐसे माता-पिता के सेवक का दर्शन करने की इच्छा की. संयोग की बात उन्हीं दिनों श्री द्वारिकापुरी में भगवान श्रीद्वारकानाथ श्रीकृष्णजी के रनिवास में कुछ कलह हो गया, जिसमें महारानी श्रीरूक्मिणीजी श्रीकृष्ण पर नाराज हो गयीं कि आप श्री सत्याभामाजी का पक्ष लेते हैं, आप उनको अधिक प्यार करते हैं. आदि. अतः वे चुपके से महल से निकलकर वन में चली गईं. मनाने में परमप्रवीण प्रभु ने जैसे-तैसे उन्हें रिझाकर राजी कर लिया और बोले देखो, भाग्य से हम लोग समीप आ गये हैं, यहां से कुछ दूर पर एक भक्तराज रहते हैं, हमारा विचार है कि पहले हम लोग उनका दर्शन कर लें फिर बाद में द्वारका चलेंगे. श्रीरूक्मिणीजी ने आज के कलहको शुभ-शकुन माना, जो कि उसके कारण से एक महाभागवत के दर्शन का सुयोग मिल गया. फिर तो श्रीकृष्ण-रूक्मिणी, दोनों ही भक्त श्रीपुण्डरीकजी के घर आये. उस समय भक्तजी दत्तचित्त होकर माता-पिता की सेवा कर रहे थे. भगवान ने पीछे खड़े होकर कहा कि हम तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न होकर दर्शन देने आये हैं, हमारा दर्शन कर लो. श्री पुण्डरीकजी यह कहते हुए कि अभी मैं सावकाश नहीं हूं, थोड़ी देर तक आप रूकें, मैं सेवा से फुरसत पाने पर आपका दर्शन करूंगा. भगवान को बैठने के लिए पीछे ईंट खिसका दी. श्रीभगवान ईंट पर खड़े रहे. इसी से श्रीपुण्डरीकनाथ भगवान का एक नाम इट्ठल भी पड़ गया. महाराष्ट्रीयन भक्तों के पदों में इट्ठल नाम आया है. यह इट्ठल शब्द ही विट्ठल के रूप में प्रसिद्ध हो गया.

माता-पिता की सेवा से अवकाश मिलने पर भक्तपुण्डरीक ने भगवान के श्रीचरण-कमल में प्रणाम किया. भगवान श्रीकृष्ण-रूक्मिणीजीने भक्त के सिर पर अपना वरदहस्त-कमल रख दिया और मनोवांछित वर मांगने को कहा. भक्त पुण्डरीक तो भगवान का दर्शन कर स्वयं कृतार्थ हो चुके थे. परन्तु सर्वे भवन्तु सुखिनः की भव्य-भावना से भावित होकर इन्होंने यही वर मांगा कि आप इसी रूप से सदैव यहां विराजमान रहें. भक्तवत्सल भगवान ने एवमस्तु कहा और आज तक उसी प्रकार ईंट पर खड़े होकर असंख्य-असंख्य भक्तों को अपने मंगलमय दर्शन से परमानन्द प्रदान कर रहे हैं.

जन्मोत्सव या जन्मदिन मनाने का संकल्प

वर्तमान में जन्मोत्सव या जन्मदिन जिस तरह से मनाया जाता है इससे आप सभी भलीभांति परिचित हैं. कुछ वर्ष पूर्व मुझे नागपुर (महाराष्ट्र) जाने का अवसर

मिला. उस समय वहां पर एक पूज्या साध्वीजी का चतुर्मास का कार्यक्रम चल रहा था. संयोगवश उसी दौरान उस पूज्या साध्वीजी का जन्मदिन मनाया गया. जन्मदिन मनाये जाने का तरीका बड़ा ही विलक्षण था, जिसे देखकर बहुत अच्छा लगा. जिस दिन पूज्या साध्वीजी का जन्म दिन था उस दिन प्रातः सत्संग सभा में आयोजकों द्वारा घोषणा की गई कि आज साध्वीजी का जन्मदिन है, इस उपलक्ष में उनके द्वारा दीप प्रज्जवलित किया जाएगा, तत्पश्चात् पूज्या साध्वजीजी द्वारा दीप प्रज्जवलित किया गया. सभा के अन्त में आयोजकों द्वारा पुनः एक घोषणा की गई कि पूज्या साध्वीजी के जन्मदिन के उपलक्ष में प्रसाद वितरण स्टॉल पर मिष्ठान के पैकेट (एक किलो एवं आधा किलो) रखे हुए हैं. इन पैकेटों के अन्दर एक सूचना रखी हुई है जिस पर आपको किस तरह साधना करनी है, अंकित है. एक किलो के पैकेट पर पन्द्रह दिन एवं आधे किलो के पैकेट पर सात दिनों की साधना आपको करनी है. अब यह आपके ऊपर निर्भर है कि यदि आप पन्द्रह दिनों की साधना करना चाहते हैं तो एक किलो मिष्ठान का प्रसाद एवं सात दिनों की साधना के लिए आधा किलो मिष्ठान वाला प्रसाद ले जायें.

ठीक इसी तरह हम लोग भी अपने परिवार में रहकर अपने गुरूजनों एवं परिवारजनों का जन्मदिन उपरोक्त पद्धति से मना सकते हैं. जैसे यदि आपको अभी चार माह की साधना का संकल्प लेना है तो माह जुलाई २००४ में १८ तारीख से परम पवित्रतम पुरूषोत्तम मास शुरू हो रहा है. आप उस दिन परिवारजनों के मध्य बैठकर यह तय करें कि हम इस दिन से लेकर पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के जन्मोत्सव (अक्टूबर, २००४) तक प्रतिदिन पांच, दस या पन्द्रह मालायें प्रतिदिन फेरा करेंगे या प्रतिदिन प्रातः एवं सायंकाल एक-एक घंटे तक श्रीमदभागवत्, रामायण, प्रेम प्रकाश ग्रंथ एवं अन्य धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन करेंगे.

आशा करते हैं कि आप उक्त विचारों से सहमत होंगे.

अब गलती न दोहराऐंगे

सम्मेलन में उपस्थित अधिकांश प्रेमी ऐसे होगें जिन्होंने परम पूज्य गुरूवर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, गुरूवर स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज एवं गुरूवर हरिदासरामजी महाराज से दीक्षा प्राप्त की होगी. एक अध्ययन से यह बात स्पष्ट होकर उभरी है कि अधिकांश प्रेमियों को पूज्य गुरूजनों के अमरापुरधाम सिधारने के पश्चात् अर्न्तमन में पछतावा हुआ है और यह कहते हुए सुना गया कि हमने (उन्होंने) पूज्य गुरूजनोंको जानने में देर कर दी. उनके द्वारा बताये रास्ते पर न चले/उनकी शिक्षाओं को व्यवहार में न उतारा.

अब तो हमारे ही जीवन का समय शेष कम है, अब सचेत हो जायें/वर्तमान पीठाधीश्वर गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज पर पूर्ण भरोसा कर उन्हें इन बाह्य नेत्रों से न देखकर क्षय किरणों (एक्सरे मशीन) से देखेंगे तो उनसे कुछ प्राप्त कर सकेगें. अभी-अभी कुछ माह पूर्व मंगलमूर्ति आचार्यजी से दीक्षा प्राप्त किये हुए भक्त को मोक्ष प्रदान करते हुए, इन्हीं नेत्रों ने पूज्य महाराजश्री को देखा है. आवश्यकता है तो केवल एकनिष्ठ होने की.

उज्जैन सिंहस्थ कुम्भ मेले के पावन अवसर पर स्वामी टेऊँराम अन्नक्षेत्र पर एक दिन सायंकाल को इन्द्र देवता की कृपा से बिजली कड़कने के साथ ही बरसात होने लगी उसके साथ ही मिट्टी की भीनी-भीनी सुगंध ने वातावरण को सौम्य कर दिया. उस समय पूज्य महाराजश्री (गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज) कांधे पर गेरूआ टाविल रखे पुण्य सलिला क्षिप्रा जी की ओर निहार रहे थे. उस समय मंद-मंद ठंडी हवा से पूज्य महाराजश्री के वस्त्र लहरा उठे, तभी दूर से देख कर ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो जैसे तपोमूर्ति पूज्यपाद गुरूवर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज स्वयं खड़े हुए हैं, तभी एकाएक उस चित्र का स्मरण हो आया जो कुछ वर्ष पूर्व इन्डोनेशिया के प्रेमियों ने ज्ञान स्वरूप पूज्य गुरूवर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज की पवित्र स्मृति में एक पॉकेट कलेंडर पर प्रकाशित किया था. आईये मंगलमूर्ति आचार्यश्री से प्रार्थना करें कि पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज चिरंजीवी हों.

—संपादक

लौकिक सुख–अलौकिक सुख–अन्तर

आप क्या नहीं चाहते हैं

प्रभु के चरणों में बैठकर विचार करने पर आपको स्पष्ट अनुभव होगा कि आप अपने जीवन में लेशमात्र भी दुःख नहीं चाहते हैं. इस संसार का कोई भी व्यक्ति एक पल के लिये भी दुःखी, चिन्तित, भयभीत, निराश, परेशान अथवा मानसिक तनाव से ग्रसित नहीं रहना चाहता है. दुःख आने की सम्भावना भी बन जाय तो आप शीघ्रातिशीघ्र उस दुःख से मुक्त होने का उपाय करते हैं. यह आपके जीवन का अनुभव है. मानव तो क्या, इस संसारका कोई भी प्राणी-पशु,पक्षी,कीट-पतंग आदि भी दुःख नहीं चाहते हैं.

आप क्या चाहते हैं

आप अपने जीवन में सुख, सुविधा, आराम, प्रसन्नता चाहते हैं, आप इस जीवन को शान्ति एवं आनन्द के साथ जीना चाहते हैं, अपने परिवार में आनन्द से रहना चाहते हैं. आप दुःख, चिन्ता, भय, निराशा, तनाव, क्रोध को जड़मूल से मिटाकर सुखमय जीवन व्यतीत करना चाहते हैं. आपने अपने जीवन में अबतक जो कुछ किया है और इस समय आप जो कुछ कर रहे हैं, उसके पीछे आपका एक ही उद्देश्य रहा है-सुखमय जीवन, आनन्दमय जीवन.

आप कैसा सुख चाहते हैं

सुख दो प्रकार का होता है-

(१) लौकिक या सांसारिक सुख- लौकिक सुख का आशय उस सुख से है जो संसार की किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा परिस्थिति के संयोग से मिलता है. आपको अपनी इच्छित वस्तुएं-मकान, सोना-चांदी आदि मिलें; आपको पति, पत्नी, संतान, भाई, बहन आदि परिवारजन मिलें, आपको अनुकूल परिस्थिति मिले-इन सब के मिलने से आपको जो आराम महसूस होता है, उसे लौकिक सुख कहते हैं.

लौकिक सुख कैसा होता है

लौकिक सुख की निम्न विशेषताएं होती है-

(क) आरम्भ में अभाव का दुःख- इस सुख के आरम्भ में अभाव का दुःख छिपा रहता है. आपकी दो पुत्रियां हैं, पुत्र नहीं है. आपको पुत्र का जो अभाव महसूस होता है, वही अभाव का दुःख है. आपके सभी भाइयों, मित्रों एवं सम्बन्धियों के पास अपने निजी मकान हैं, आपके पास अपना मकान नहीं है. आप मकान का अभाव अनुभव करते हैं-यही दुःख है.

(ख) संयोग में सुख मिलना- आप जिसका अभाव महसूस करते हैं, वह वस्तु या व्यक्ति आपको मिल गया. इनके मिलते ही आपको जो आराम महसूस होता है, वहीं संयोग का सुख है. जो जन्मता है, बढ़ता है, बदलता है, बिगड़ता हैं और अन्त में मरता है, उसे संसार या लोक कहते हैं. संसार की वस्तु, व्यक्ति आदि के मिलने से लौकिक सुख महसूस होता है.

(ग) सुख घटना- लौकिक सुख मिलने के बाद वैसा ही नहीं रहता है. यह सुख जिस पल में मिलता है, उस समय बहुत खुशी होती है. परंतु मिलने के तत्काल बाद ही यह निरन्तर घटना आरम्भ हो जाता है. पुत्र-जन्म का पहला समाचार मिलते ही आपको जितनी खुशी होती है, उतनी खुशी एक घंटे बाद नहीं रहती. एक दिन, एक माह, एक वर्ष, दस वर्ष बाद वह खुशी और भी कम हो जाती है. लौकिक सुख मिलता है, फिर घटता है.

(घ) सुख मिटना- जिस वस्तु अथवा व्यक्ति के संयोग से यह सुख मिलता है, उसके न रहने पर यह सुख मिट जाता है. पुत्र हुआ, आपको सुख मिला; फिर सुख घटता गया; पुत्र नहीं रहा, अब पुत्र का सुख मिट गया.

(ड) अवश्य मिटेगा- आप किसी भी उपाय से लौकिक सुख को सदैव के लिये अपने पास नहीं रख सकेंगे. एक-न-एक दिन यह निश्चित रूप से मिटेगा. सब मर-मिट जायंगे-पति, पत्नी, स्वजन, सामान, मकान आदि; इतना ही नहीं, आपका शरीर भी आपके पास नहीं रहेगा, वह भी मर जायेगा. गहराई से विचार करने पर आपको अनुभव होगा कि लौकिक सुख का घटना ही उसका मिटना है.

(च) भयंकर दुःख- यदि अपनी ही भूल से आपने लौकिक सुख का भोग कर लिया तो इसके मिटने पर आपको भयंकर दुःख होगा; आप गहरी चिन्ता, तनाव, निराशा से ग्रसित हो जायंगे. वह दुःख वर्षों तक बना रहेगा. हो सकता है उस दुःख की पीड़ा से आपका जीना दूभर हो जाय, आपका जीवन दुःखमय बन जाय. पुत्र तथा मकान के संयोग में आपको सुख मिला, उनके वियोग में कितना भयंकर दुःख होता है- यह सभी भाई-बहनों के जीवन का अनुभव है. लौकिक सुख के भोग का आशय है- वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति के मिलने पर हर्षित हो जाना, खुश हो जाना, राजी हो जाना. हर्षित होते ही उस सुख का भोग हो जाता है.

(छ) पराधीनता, शक्तिहीनता, जड़ता- आप जिसके माध्यम से सुख का भोग करेंगे उसके पराधीन हो जायंगे, चाहे वह आपका शरीर, इन्द्रियां, पति, पत्नी, संतान, वस्तु आदि कोई भी क्यों न हो. पराधीन होने का आशय यह है कि आप अपने जीवन में उसकी आवश्यकता महसूस करेंगे, आपके हृदय में उसके वियोग का भय पैदा हो जायेगा और जब उसका वियोग होगा, तब आप दुःखी एवं चिन्तित हो जायंगे. सुख के भोग से आपकी शारीरिक तथा मानसिक शक्ति का ह्रास होगा. आपके जीवन में जड़ता आ जायगी, अर्थात् आप यह भूल जायंगे कि संसार के सुख के अतिरिक्त उससे परे शान्ति,

मुक्ति तथा भक्ति का अलौकिक सुख भी है, आप सुख-दुःख के बन्धन में फंस जायंगे.

स्पष्ट है, लौकिक सुख के आरम्भ में दुःख है, अन्त में दुःख, केवल मध्य में ऐसा सुख है जो मिलते ही घटने लगता है, फिर मिट जाता है.

(२) **अलौकिक सुख-** अलौकिक सुख वह सुख है जो संसार पर आधारित नहीं है, अर्थात् वह संसार की किसी वस्तु, व्यक्ति अथवा परिस्थिति से नहीं मिलता है. अलौकिक सुख की विचित्रता यह है कि वह मिलता है, मिलने के बाद निरन्तर बढ़ता है और बढ़ता ही चला जाता है. उसके बढ़ने की कोई सीमा नहीं है. वह असीम है, अनन्त है, अविनाशी है. इस अलौकिक सुख के तीन नाम हैं-जो व्यक्ति भगवान को मानते हैं, उनकी भाषा में इसका नाम है- भगवत्प्राप्ति या भगवद्भक्तिका आनन्द; जो भगवान को नहीं मानते हैं, उनकी भाषा में इसका नाम है-परम शान्ति या दुःख-निवृत्तिका आनन्द; जो न तो भगवान को मानते हैं और न संसार को मानते हैं, उन ज्ञानी साधकों की भाषा में इसका नाम है-जीवन्मुक्ति अथवा तत्व या मोक्ष का आनन्द. इसी सुख का नाम है-परमानन्द, निजानन्द, स्थायी प्रसन्नता, अलौकिक आनन्द.

आप कौन-सा सुख चाहते हैं

संसार के सभी भाई-बहन अलौकिक सुख चाहते हैं. आप सदैव बना रहनेवाला, सदैव बढ़नेवाला- यही अलौकिक सुख चाहते हैं. यही आपके जीवन की मौलिक मांग है, आपकी आधारभूत आवश्यकता है. स्मरण रहे, चौरासी लाख योनियों में केवल मानव-जीवन में ही अलौकिक सुख की प्राप्ति हो सकती है, अन्य किसी भी योनि में नहीं. इसीलिये आपके इस मानव-जीवन की विशेष महिमा है.

अलौकिक सुख कैसे मिलेगा

अलौकिक सुख संसार की किसी भी वस्तु, व्यक्ति अथवा परिस्थिति की सहायता से नहीं मिलेगा. यह आपके शारीरिक एवं मानसिक बल, बुद्धि, योग्यता, पद, अधिकार, धन, सम्पत्ति, सम्मान आदि से भी नहीं मिलेगा. अलौकिक सुख की प्राप्ति का अमोघ उपाय है-सत्संग.

श्रीरामचरितमानस में इसी बात को बताया गया है-

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग.
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत्संग..

(सुन्दरकाण्ड, दोहा ४)

इसका आशय है- हे तात! स्वर्ग और मोक्ष के सब सुखों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाय, तो भी वे सब मिलकर (दूसरे पलड़े पर रखे हुए) उस सुख के बराबर नहीं हो सकते, जो एक लव (क्षण)-के सत्संग से होता है.

एक क्षण का सत्संग

अलौकिक आनन्द की प्राप्ति के लिये आपको अपने जीवन में सत्संग करना होगा. कितने दिनों के सत्संग से अलौकिक सुख मिलेगा? बड़ा आश्चर्यजनक उत्तर-केवल एक लव या एक पल के सत्संग से ही आपको अलौकिक सुख मिल जायंगा. प्रभु कितने उदार हैं कि जो कार्य एक पल में हो जाता है, उसे करने के लिये हमें उन्होंने इतना लंबा मानव-जीवन दिया है.

क्या कोई अन्य उपाय भी है

सत्संग के अलावा अलौकिक सुख की प्राप्ति का क्या कोई अन्य उपाय भी है-इस प्रश्न के उत्तर में श्रीरामचरितमानस में गोस्वामीजी ने यही लिखा है कि कोई दूसरा उपाय नहीं है-

बालमीक नारद घटजोनी. निज निज मुखनि कही निज होनी..
जलचर थलचर नभचर नाना. जे जड़ चेतन जीव जहाना ..
मति कीरति गति भूति भलाई. जब जेहिं जतन जहां जेहिं पाई..
सो जानब सत्संग प्रभाऊ. लोकहुँ बेद न आन उपाऊ..

(बालकाण्ड, ३ । ३-६)

इसका आशय है-वाल्मीकिजी, नारदजी और अगस्त्यजी ने अपने-अपने मुखों से अपनी होनी (जीवन की कथा) कहीं है. जल में रहनेवाले, जमीन पर चलनेवाले और आकाश में विचरने वाले नाना प्रकार के जड़चेतन जितने जीव इस जगत में हैं, उनमें से जिसने जिस समय जहां कहीं भी जिस किसी यत्न से बुद्धि, कीर्ति, सद्गति, विभूति(ऐश्वर्य) और भलाई पायी है, सो सब सत्संग का ही प्रभाव समझना चाहिये. वेदों में और लोक में इनकी प्राप्ति का दूसरा कोई उपाय नहीं है. स्मरण रहे, यहां सद्गति, विभूति आदि का आशय अलौकिक सुख से ही है.

तीन अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न

आपके हृदय में निम्न तीन प्रश्न पैदा हो सकते है-

(१) क्या भगवान की भक्ति से अलौकिक सुख नहीं मिलेगा ?

(२) क्या विवेक का आदर करने से अलौकिक सुख नहीं मिलेगा ?

(३) क्या हरि कथा से अलौकिक सुख नहीं मिलेगा ?

-इन तीनों प्रश्नों का समाधान इस प्रकार है- भगवान की भक्ति से अलौकिक सुख अवश्य मिलेगा, निश्चित-रूप से मिलेगा, परंतु सत्संग के बिना आपको भगवान की भक्ति नहीं मिलेगी. श्रीरामचरितमानस में भगवान श्रीराम ने अपने मुखारविन्द से इस बात को बताया है-

भक्ति सुतंत्र सकल सुख खानी. बिनु सत्संग न पावहिं प्रानी..

(उत्तरकाण्ड, ४५ । ५)

इसका आशय है- भक्ति स्वतन्त्र है और सब सुखों की खान है. परंतु सत्संग के बिना प्राणी इसे नहीं पा सकते.

विवेक के आदर से अलौकिक सुख निश्चित-रूप से मिलेगा, परंतु सत्संग के बिना आप विवेक का आदर कर ही नहीं पायेंगे. श्रीरामचरितमानस में यही बात आयी है-

बिनु सत्संग विवेक न होई. राम कृपा बिनुसुलभ न सोई.

इसका आशय है- सत्संग के बिना विवेक (जाग्रत) नहीं होता और श्रीरामजी की कृपा के बिना वह सत्संग सहज में मिलता नहीं.

स्मरण रहे, केवल मानव-जीवन में ही आप सत्संग कर सकते हैं. मानव-जीवन प्रभु की कृपा से ही मिलता है. आपको मानव-जीवन मिल गया तो आप पर प्रभु की कृपा हो गयी, क्योंकि अब आपके लिये सत्संग सुलभ हो गया. श्रीरामचरितमानस में लिखा है-

सबहि सुलभ सब दिन देसा. सेवत सादर समन कलेसा..

इसका आशय है-मानव-जीवन में सब देशों में, सब समय सभी को सहज में ही सत्संग प्राप्त हो सकता है. उस सत्संग का आदरपूर्वक सेवन किया जाय तो वह क्लेशों का नाश करने वाला है. भगवान की कथा के श्रवण करने से अलौकिक सुख अवश्य मिलेगा, परंतु सत्संग के बिना भगवान की कथा सुनने का जो सुप्रभाव होना चाहिये, वह नहीं होगा. श्रीराचरितमानस की अमृतवाणी है-

बिनु सतसंग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग.
मोह गएं बिनु राम पद होइ न दृढ़ अनुराग..

इसका आशय है-सत्संग के बिना हरिकथा नहीं मिलती, उसके बिना मोह दूर नहीं होता और मोह गये बिना श्रीरामजी के चरणों में दृढ़ प्रेम नहीं होता. स्पष्ट है, भगवान की भक्ति, विवेक का आदर और भगवान कथा के प्रभाव एवं विशेष लाभ की प्राप्ति के लिये भी सत्संग करना अत्यावश्यक है. सत्संगही अलौकिक सुखकी प्राप्ति का आधारभूत उपाय है.

सोमवती अमावस्या तक रहेगा पुरूषोत्तम-मास

हिन्दू पंचाग के अनुसार इस बार सावन का महीना ५६ दिन का होगा. ऐसा अधिक मास पड़ने के कारण होगा. १८ जुलाई से १६ अगस्त तक अधिक मास रहेगा. अधिक मास को मल मास भी कहा जाता है और इस दौरान शुभ कार्य वर्जित माने गए हैं. इससे पहले १९८५ में सावन में अधिक मास पड़ा था और इसके बाद २०२३ में सावन के ही महीने में अधिक मास पड़ेगा.

अधिक मास का मूल सिद्धांत है कि इस मास में सूर्य संक्रांति नहीं होती क्योंकि जिस संवत में अधिक मास पड़ता है उस संवत में १३ महीने होते हैं ओर राशियां १२ होती हैं तथा सूर्य इन्हीं १२ राशियों में भ्रमण करता है. अधिक मास में सूर्य राशि परिवर्तन नहीं करता और दो माह तक एक ही राशि में स्थित रहता है. इस बार अधिक मास १८ जुलाई से १६ अगस्त यानी सोमवती अमावस्या तक रहेगा. इन तीस दिनों में सूर्य संक्रांति नहीं होगी. पहले इस मास में किए गए शुभ कर्म दूषित हो जाते थे तथा उनके फलों का क्षय हो जाता था इसलिए इस माह में विवाह संस्कार आदि शुभ कार्य वर्जित थे. इस कारण ही इसे मल मास की भी संज्ञा दी गई है.

३५४ दिनों के चंद्र वर्ष की अपेक्षा ३६५ दिनों का सौर वर्ष ११ दिन बड़ा होता है. चन्द्र और सौर वर्ष में ११ दिन का अंतर अतिशेष कहलाता है, यह अतिशेष बढ़ते-बढ़ते २७ से ३५ माह के बीच एक चन्द्र मास (२९ दिनों) के बराबर हो जाता है. लगभग साढ़े बत्तीस महीने बाद अतिरिक्त जुड़ा हुआ चंद्र मास ही अधिक मास कहलाता है और १९ वर्ष की अवधि में सात बार अधिक मास पड़ते हैं.

मल मास को पुरूषोत्तम मास भी कहा जाता है. एक पौराणिक कथा के अनुसार मल मास द्वारा भगवान विष्णु की आराधना की गई और भगवान के प्रसन्न होने पर मल मास ने अपनी उपेक्षा की बात भगवान से कही. इस पर भगवान विष्णु ने मल मास का नाम बदलकर पुरूषोत्तम मास रख दिया और कहा कि मल मास में किए गए दान-पुण्य का लाभ अक्षय होगा, मल मास के पुरूषोत्तम मास बनने के बाद भी इसमें शुभ कार्य वर्जित हैं. –पं. सुनील जोशी, ग्वालियर

ठाकुरदास आसवानी जी अमरापुरधाम सिधारे

मन्दसौर-८० वर्षीय श्री ठाकुरदास केशवदास आसवानी जी २८ मई को अपनी सांसारिक यात्रा पूरी कर सद्गुरू महाराज के श्री चरणों में सर्वदा के लिए लीन होकर अमरापुर धाम सिधारे. आचार्यश्री की तपःस्थली टण्डोआदम में जन्मे श्रीठाकुरदास जी १३ वर्ष की अवस्था से ही सद्गुरू महाराज जी व गुरू दरबार की सेवा में रहे. आचार्यश्री से दीक्षा प्राप्त दादा श्री ठाकुरदासजी के परलोक गमन पर गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने टेलीफोन द्वारा परिजनों को सांत्वना दी व मृतात्मा की शांति के लिए सद्गुरू महाराज जी से प्रार्थना की.

आनन्द के भरे भण्डार है हमारे आचार्यश्री

(पूज्यपाद गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के सत्संग प्रवचनों से)

हम प्रेम प्रकाशीयों को वरदान स्वरूप मिली हुयी विराट कृपा. जिस पर कुर्बान कर दूँ सर्वस्व-तन मन धन ये जान ये हृदय. जिन्होंने हमें कृपा करके प्रेम प्रकाश संत मंडल दिया. सचमुच जिन्होंने उन्हें देखा है. आज वे ही इतने मस्ती भरे भावों में भीगे-भीगे रहते हैं. कि जो उन्हें देखले वो भी कुछ देर के लिये आनंदित हो जाये. अगाध भक्ति के भंडार गुरू महाराज जिनके नाम के आगे सारे पदार्थ फीके पड़ जाते हैं. जोगियों के सरदार, प्रेम के अवतार जिन्होंने भगवत् भक्ति के छोड़कर कुछ किया ही नहीं.

रातों को नींद नही थी, दिन में न था आराम
एक ही साधा लक्ष्य जिसने पाया आत्मराम
बचपन से ही जिन्होंने नाम रस का पान किया
लोरियों में भी राम जो सुनते, पढ़ने में भी राम जो जपते
झंगल झबल में छिपकर हर पल स्वांस-स्वांस में राम सिमरते
हरि की हर रजा में राजी, जहां रहे बस ये ही कहते
राम ही सुनें, राम ही देखें, हृदय बसाया राम
जिसका जीवन ही इक राम, था अब उसे कहां आराम
करना रैन रात इक काम, पीना नाम का भर-भर जाम
बन गये करूणा के भंडार, बह रही प्रेम की अमृत धार

भक्त प्रह्लाद की कथा किसी से छिपी नहीं है अनंत वेदनाओं को सहते हुए जिन्होनें परमार्थ को पाया. परमात्मा की भक्ति करना कोई सरल काम नहीं है. लिखने वाले तो उनकी महिमा में किताबें लिख लेंगे. और सुनाने वालों की भी कमी नहीं है. आज किसी से यदि एक प्रश्न पूछो तो एक प्रश्न के उत्तर में वो तीन घंटे का सत्संग करले तो भी कम पड़ जायेगा. भले ही अपने जीवन में कुछ न हो परंतु उपदेशक बनने जैसा कोई सरल कार्य नहीं है. श्रोता भी सुनते-सुनते मुंह हिलाते-हिलाते चलते बनेंगे. और फिर जब घर पहुंचे तो सत्संग का एक शब्द नहीं याद रहता. परंतु सच्चा वक्ता तो वही है जो एक लाईन में ही ऐसी बात कह दे जो श्रोता के दिल में घर कर जाये. ऐसा तीर लग जाये कि आगे संभलने के लिये वो मजबूर हो जाये. उसे अपनी गलती इस तरह से चुभने लगे जैसे सहस्त्र शस्त्रों का वार उसी पर कर दिया गया हो. ऐसे श्रेष्ठ श्रोता एवं वक्ता हो तो कुछ बात बनें अन्यथा यूं ही जीवन बीता जा रहा है.

लिखने वालों ने राम की महिमा में रामायण लिख डाली प्रह्लाद की कथाओं से किताबें भर दी. पर प्रह्लाद बनना शायद ही किसी ने जाना हो. हमारे गुरू महाराज ऐसे ही ज्ञानी थे. जिन्होनें सिर्फ सुना नहीं, सिर्फ कहा नहीं अपितु स्वंय वो सारी परिस्थितियों पर खरे उतरे. गुरू भक्ति की कठिन डगर पर अपनी जीवन नैया को बिछा दिया. और भव से पार उतर गये. तथा सिर्फ स्वयं पार नहीं उतरे जिन्होंने भी उनके सानिध्यता के सुअवसर को प्राप्त किया आज वे भी जगत में सितारों की तरह चमक रहे हैं और स्वामी टेऊँराम जी महाराज के नाम को चाँद की तरह रोशन किये जा रहे हैं.

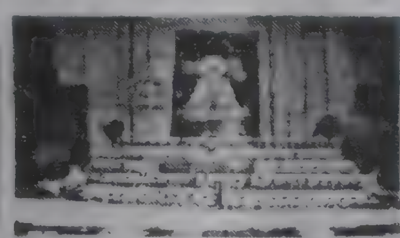
खण्डू नगर के छोटे से गाँव में जन्मा एक नन्हा सा बालक आज त्रिलोक से भी ऊँचा हो गया. महिमा लिखने वालों ने भी एक बहुत ही सुदंर बात लिखी है. किरोड़े सूर्य चंद्र तारा, कनिजि रोशन कठा गदिजी, उन्हनि खाँ भी वधिक रोशन सुंदर तस्वीर सत्गुरूजी अर्थात् करोड़ों सूर्य, करोड़ों चाँद, करोड़ों तारे इकट्ठे रोशन हो जायें. तब भी हमारे गुरूदेव की अलौकिक छटा के आगे वे फीके पड़ जायेंगे. कोई कितने ही गमों के सागर में डूबा हो, कोई कितने ही पापों से भरा हो कोई किसी भी तरीके से कितना ही दरिद्र हो. मगर ऐसी मदहोश कर देने वाली मूरत को एक बार देख लेने से वो आनंद के फव्वारों में न भीगे. उल्लास के समुद्र में न डूबे ये असंभव से भी असंभव बात है.

उसके मन से सारे फुरने ऐसे चले जायेंगे जैसे सूरज के आ जाने से सारा अंधकार मिट जाता है और उनके आगे भी यदि हमें संसार की तरफ से कोई स्वार्थ बाकी रह जाता है उनके आगे भी यदि हम संसार की ही मांग करते हैं. तो हम स्वयं समझदार हैं कि फिर हमारी पहुंच अभी कहां है. फिर हम दिखने में तो मनुष्य जरूर हैं. मगर किसी पाषाण मानव से कम नहीं. आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज हमें ऐसे दातार मिले हैं जिसे इस दिल ने चाहा है. हमारे दिल की चाहत है आनंद, और आनंद के भरे भंडार है हमारे गुरू महाराज. प्रेम प्रकाश मंडल के भूषण, भक्ति के सोलह श्रृंगार किये परिपूर्ण ज्ञान के धनी दोनों बाहें फैलाये बैठे हैं. बस अब बारी हमारी है. वे तो हमें जगाने आ गये है, मगर जागना हमें है और जो जाग जायेंगे. उन सौभाग्यशालियों को गुरू महाराज अपने आलिंगन में भरकर उस सच्चिदानंदघन में समाहित कर देंगे. मिटाकर हमारी हस्ती उस मस्ती में मिला देंगे. इसी प्रार्थना के साथ कि हम सभी पर उनकी अमृत कृपा बनी रहे.

उल्लास ही उल्लास बाबा के प्रकटोत्सव पर गुलाबी नगरी हुई टेऊँराममय

सांई टेऊँराम दिव्य ज्योति से जगमगा उठे प्रेम प्रकाश आश्रम व प्रेम प्रकाशीयों के गृह मंदिर

जब-जब धरती पर अधर्म का बोझ बढ़ता जाता है तब-तब जीवों के उद्धार के लिये सन्त महापुरूष अवतार लेकर इस धरती पर आते हैं. ऐसे ही जब सिन्ध के धरा-धाम पर अधर्म का बोझ बढ़ने लगा तब भगवान के आदेश पर सतगुरू टेऊँरामजी ने अवतार लेकर जीवों का उद्धार किया. स्वामी जी ने अवतार लेकर केवल उस समय ही जीवों का उद्धार नहीं किया बल्कि स्वामी जी के ज्ञान उपदेश शिक्षा पर चलकर आज तक श्रद्धालु इस सांसारिक बन्धन से मुक्त होते हैं. आज स्वामी जी भले ही शारीरिक रूप से इस धरती पर नहीं है. परन्तु स्वामी जी के उपदेश शिक्षा आज भी संसार में सब जगह व्याप्त हैं. स्वामी जी के आशीर्वाद और प्रेम प्रकाश मण्डल के संतगणों के सानिध्य में रहकर आज भी प्रेमीगण सांसारिक बन्धन से मुक्त होकर परमात्मा के सुमरण में लगे हुए हैं.



हमारे आचार्यश्री जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मानवमात्र की सेवा के लिये लगाया तो ऐसे हमारे स्वामी जी के अवतरण का दिवस भला भक्तगण कैसे भूल सकते हैं. स्वामी जी के अवतरण का दिवस पिछले ११७ सालों से हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है तो इस वर्ष भी स्वामी जी का ११८वां जन्मोत्सव वड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया. १९ जून से २३ जून तक जयपुर सहित सम्पूर्ण विश्व के प्रेमप्रकाशी व्यस्त थे, आचार्य स्वामी जी के जन्म समारोह में. गुलाबी नगरी जयपुर का सम्पूर्ण यातायात प्रेमीयों को भी अमरापुर धाम में लेकर आने में व्यस्त था.

१९ जून- आज तो प्रातःकाल से ही श्री अमरापुर की धरा को सजाया जा रहा था. एक तो शनिवार का पावन दिवस जिस दिन आचार्यश्री ने अवतार लिया वहीं दूसरी और आचार्यश्री के जन्मोत्सव का शुभारम्भ और तीसरा प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर भगतप्रकाशजी महाराज का हमारे बीच होना. तो इतने पावन दिन भला प्रेमीगण कहां पीछे रहने वाले थे. वह जल्दी से जल्दी आकर इस दिव्य अमृत गंगा में शामिल होने लगे.श्री दरबार में जब हमने प्रवेश किया तो वहां का अलौकिक नजारा देखकर तो मन गद्‌गद् हो उठा. श्री दरबार का बाहरी विशाल सिंह द्वार के चारों तरफ रंग बिरंगे गुलाल से सजी रंगोली और उसको और ज्यादा आकर्षित बनाने के लिये बीच बीच में रखे छोटे-छोटे गमले इस द्वार से आगे आकर गुरूमुख द्वार में प्रवेश किया तो श्वेत वर्ण के झालर द्वार शामियाने से विशाल सत्संग परिसर को वंधित किया गया था.

सामने सत्संग मंच पर जब हमारी नजर गई तो बड़ा झोपड़ीनुमा कॉटेज जिसमें विराजित थी हमारे इष्टदेव व हमारे गुरूदेव की चित्ताकर्षक प्रतिमाऐं. वहीं परिसर के दोनों कोनों में आचार्यश्री की विशाल आदमकद आकर्षक रंगों से बनी सिद्धहस्त मूर्ति जिसको देखकर नेत्रों को आनन्दानुभूति हो रही थी. बाऐं कोने में मंच पर आसीन हमारे मण्डलाध्यक्ष स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज तारों के बीचमें चन्द्रमा के समान प्रतीत हो रहे थे.

अरे! ये क्या दाऐं कोने का दर्शन भला हम कैसे भूल सकते है. ऐसा अलौकिक नजारा लगता है आज तो श्री दरबार में पूरा खण्डू गांव आ गया है. आइऐ आप को भी इस खण्डू गांव के दर्शन कराऐं. विशाल चित्रकारी का पर्दा लगाया गया जिसके एक कोने में बनाई गई सिन्धुनदी से बहती जल की अविरल धारा को देखकर लग रहा था कि वरूण देवता प्रेमियों को दर्शन देने के लिये श्री दरबार में आऐ हैं, उसके पास में बनाया गया कुंआ जिसको देखकर लगता ही नहीं था कि ये मात्र काल्पनिक है उसके पास में बनाया गया पुल जिसके दूसरी और दो-तीन झोपड़िया कोई चौकोर तो कोई गोल जिसमें एक और स्वामी जी की ध्यान मूर्ति रखी गई थी वही पास में बनी गौशाला में गाय माता को रखा गया था. इन सभी दृश्यों को देखकर हमें स्वामी जी के जीवन चरित्र की याद आ गई थी. ऐसी अलौकिक कारीगरी जिसको देखकर नेत्र तो बस बिना पलक झपकाऐ खण्डू गांव में खो गये.

फिर फूलों की खुशबू ज्योंही हमारे पास से गुजरी ध्यान आया अभी तो समाधि स्थल के दर्शन भी बाकी हैं चलो, चलें एक और अलौकिक छवि के दर्शन करने. सीढ़ियों से नीचे उतरकर ज्योंही समाधि स्थल में प्रवेश किया तो हृदय पावन हो उठा. सफेद संगमरमर से बनी गुरू महाराज की समाधि पर पीतवर्ण के कशीदाकारी किये वस्त्र जो सोने पे सुहागा का काम कर रहे थे वहीं नीचे पुष्पों व पत्तियों की सजावट इसको और ज्यादा मनोहरकारी बना रही थी.

अरे ! ये क्या स्वामी जी ने सत्संग शुरू कर दिया स्वामी जी के मधुर स्वर को सुनकर मन प्रफुल्लित हो उठा और जल्दी-जल्दी दर्शन करके कदम सत्संग हाल की तरफ बढ़ने लगे. स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में आचार्यश्री के गुणों का बखान किया और साथ ही साथ पाठों का शुभारम्भ हुआ.

२० जून- आज दूसरा दिन था श्री दिव्य अमृतगंगा का और प्रेमीगण इस अमृतगंगा में आकर अपने जीवन को कृतार्थ कर रहे थे. प्रातःकालीन सत्संग सभा हुई इसी प्रकार सायंकालीन सत्संग शुरू हुआ जिसमें अजमेर के जय अम्बे भजन मण्डली ने स्वामी टेऊँराम के महिमा का गुणगान किया इतने मधुरकारी स्वरलहरी भजनों को सुनकर प्रेमीगण

तन्मय होकर महाराजश्री की महिमा का गुणगान करने लगे. भजनामृत गंगा के पश्चात् आरती हुई और फिर श्री दरबार दीपकों की जगमगाहट से प्रकाशित हो उठा. श्री दरबार के बाहरी परिसर में बनी आकर्षक रंगोली पर दीपक रखे गये जो देखने में काफी आकर्षक लग रहे थे.

वहीं सत्संग परिसर के बीचों-बीच रंगोली से स्वास्तिक बनाया गया जिसके चारों और दीपक सजाऐ गये. रात्रि में इनको देखकर ऐसा लगता था मानों दीपक की लौ से स्वास्तिक बनाया गया है. वहीं सम्पूर्ण श्री दरबार को ११८ दीपकों से सजाया गया. खण्डू गांव में भी आकर्षक मोमबत्तियों से सजावट की गई थी. देखा जाये तो पूरा परिसर दीपकों के प्रकाश से सुशोभायमान हो उठा.

महाराजश्री के जन्मोत्सव के पांचो दिन इसी प्रकार रात्रिकालीन दीपकों की सजावट प्रेमियों को दर्शन के लिए लालायित कर देती थी. इन पांच दिनों के बीच में सद्गुरू महाराज से संबंधित कई वस्तुओं के विमोचन भी किये गये.

छप्पन भोग

२१ जून- आज है श्री दरबार में छप्पन भोग झांकी. सत्संग हाल के मध्य में आचार्य श्री की विशाल तैलीय प्रतिमा रखी गई, जिसको विभिन्न पुष्पों से आर्कषक सजाया गया और मूर्ति के बीच में एक मशाल रखी गई और महाराजश्री के सम्मुख रखे गये विभिन्न प्रकार के छप्पन भोग कोई मीठा, कोई खट्टा, कई प्रकार के फल, मेवे, मिठाई, पकवानों को थालों में सजाकर महाराजश्री के सम्मुख रखा गया. पकवानों की भीनी-भीनी खुशबू पूरे सत्संग परिसर में फैल गई. इन सभी पकवानों के साथ रखा गया प्रेम प्रकाशीयों का महाप्रसाद डोढा-चटनी.

इन छप्पन भोगों के बीच-बीच में आर्कषक गुलदस्ते रखे गये इतनी अच्छी सजाई गई छप्पन भोग झांकी जिसको देखकर प्रेमीगण उत्साहित हो रहे थे.

ये क्या ! मधुरकारी भजनों का स्वर शुरू हो गया आओ-आओ सांवरिया भोग लगाओ कि छप्पन भोग तैयारजी, थाका टावरिया करत मनुहार जी, कीर्तन की है रात गुरु आज थान आणो है.

जैसे मनोहरकारी भजन प्रेमी भी गाने लगे फिर संत मोनूरामजी ने सांई टेऊँराम बाबा को छप्पन भोग खाने के लिये आग्रह युक्त भजन गाया.

आओ भोग लगाओ सांई टेऊँराम
रूचि-रूचि भोग लगाओ सांई टेऊँराम

सभी मिलकर पूरे उत्साह से भजन गाने लगे, उनके उत्साह को देखकर लग रहा था कि भोग खाने टेऊँराम बाबा को आना ही पड़ेगा.

फूल बंगला झांकी

२२ जून- आज श्री दरबार में फूल बगला झांकी थी. जिसके लिये श्री दरबार में विभिन्न प्रकार के फूल आये हुये थे उन फूलों को पिरोने में प्रेमीगण मस्त हो गये, श्री दरबार में स्थित श्री मंदिर में महाराजश्री की प्रतिमाओं को नूतन वस्त्राभूषण से अलकृंत किया गया फिर शुरू हुई फूल बंगला झांकी की तैयारियां.

लकड़ी के बासों पर खपचियों को विभिन्न तरीकों से सजाकर एक बंगले का ढांचा तैयार किया गया और फिर विभिन्न रंगों के पुष्पों व पत्तों की पिरोई मालाओं को उस लकड़ी के ढांचों पर मनमोहक तरीके से सजाकर एक आर्कषक और भव्य फूलों का बंगला बनाया गया. गुम्बद वाला यह फूलों का बंगला देखने में बड़ा ही आकर्षक लग रहा था. सफेद, लाल, पीले, रंगों से बना बंगला प्रेमियों को अपनी और आकर्षित कर रहा था.

इस मनोहरकारी फूलों के बने बंगले के बीचों-बीच विराजित हमारे प्यारे महाराजश्री की श्वेत मार्बल की प्रतिमा को देखकर भक्तगण एक टकी नजरों से इस की दिव्य आभा के दर्शन पाकर कृतार्थ हुए.

महाप्रसादी भोग, दीप प्रज्जवलन, पुरस्कार वितरण, बधाई गीत

२३ जून- आचार्यश्री का पावन अवतरण दिवस. सत्संग समारोह के अतिरिक्त मंच पर प्यारे बाबा के सम्मुख ११८ दीपकों को सीढ़ीनुमा आकार में सजाया गया था. दीपकों के बीच में रंग-बिरंगी मोमबत्तियां भी आकर्षक थी, दीपकों पर भी सफेद चमकदार कागजों को चिपकाकर उन्हें ओर ज्यादा सुदंर रूप दिया गया था. ११८ किलो महाप्रसादी का भोग लगाया गया. जयपुर शहर का ऐसा कोई भी कोना नहीं, जहां से प्रेमी भक्त श्री दरबार में आये न हों, इसका अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि प्रातः १० बजे तक सम्पूर्ण श्री दरबार व दरबार का पूरा परिसर भक्तों से खचाखच भर गया था, उधर बाहर वाहनों की भीड़ भरी आवाजाही से यातायात कर्मियों को यातायात व्यवस्था में व्यवधान आ रहा था. ९:३० से ९:४५ बजे तक सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का कैसेट चलाया गया. अमृत प्रवचनों के पश्चात् पाठों का पारायण व आरती कार्य सम्पन्न हुये. इसके पश्चात् वयोवृद्ध संत स्वामी स्वयंप्रकाशजी महाराज ने जब दीप प्रज्जवलित किया तो सारा भक्त समुदाय हर्षित हो करताल करने लगा. साथ ही अन्य संतों ने सम्पूर्ण दीपकों को प्रकाशमान कर दिया.

११:१५ बजे संतगणों ने दोहा स्मरण प्रतियोगिता के विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया. और इसी के साथ बैंड की सुमधुर गायन के साथ बधाई गीतों का सिलसिला चल पड़ा. संत मोनू रामजी के श्रीमुख से- जन्म मनायो मिली मौज मचायो, मुहिंजो सतगुरू आयो. भजन सुनकर प्रेमी हर्षातिरेक होकर अपने-अपने स्थानों पर खड़े होकर करताल बजाते हुये नृत्य करने लगे. सूंहे मुहिंजो सांई टेऊँराम, गेरू चोले में भजन को जब सुंदर बैंड वालों ने गाया तो सभी भक्तगण और अधिक मस्त हो गये और अत्यधिक जोश से संतगण भजन को गाने लगे-जन्म लही अजु जोगी आयो, टेऊँराम आ नालो जहिंजो. न किसी को समय का भान रहा इस मस्ती भरी दोपहरी में. अन्ततः संतों ने ही शिवोहम् की धुनि से जन्मोत्सव को सम्पन्नता की ओर बढ़ाया एवं सभी को भंडारे का पावन प्रसाद ग्रहण करने का अनुरोध किया.

इसी प्रकार देशविदेश के विविध भागों में जन्मोत्सव का महाआनन्द प्रेमियों ने अपने-अपने स्तर पर जन्मोत्सव के कार्यक्रम आयोजित कर प्राप्त किया. प्रेम प्रकाश आश्रमों में आयोजित जन्मोत्सव की एक झलक-

बड़ौदा- जयपुर अजमेर के अतिरिक्त जन्मोत्सव कार्यक्रम प्रमुखता से आयोजित होता है संतकंवर कॉलोनी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर. स्वामी अशोकप्रकाशजी महाराज,संत राजूरामजी के सानिध्य में प्रेमियों ने मंगलोत्सव का महाआनन्द बटोरा. **कोटा**- श्री अमरापुरधाम का प्रतिरूप श्रीपुरा स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम जहां स्वामी मनोहरप्रकाशजी महाराज व संत श्यामलालजी के सानिध्य में कोटा आश्रम पर पांचों दिन मेला लगा रहा. सारे शहर में हर एक की जुबान पर था धन गुरू टेऊँराम. **दिल्ली**- देश का हृदय दिल्ली, मलिकागंज स्थित प्रेमप्रकाश धाम में संत लालू प्रकाशजी व नेहरू नगर स्थित प्रेम प्रकाश मंदिर में माता रूक्मणी देवीजी के सानिध्य में दिल्ली वासियों ने पूरे उत्साह भक्ति के साथ जन्मोत्सव में भाग लिया. **ग्वालियर**- गाढ़वे की गोट स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर संत हरिओमलालजी, संत प्रतापरायजी व दादी लाजवंती के सानिध्य में पांचों दिन प्रेमियों ने मेले की मौज में नाम के अमृत का आनन्द लिया. अन्य दरबारों की भजन मण्डलीयों का मंगलगायन व बच्चों की नृत्य प्रस्तुतियां, छोटे-छोटे बच्चों का आचार्यश्री व संतों के स्वरूप में दर्शन उत्सव के खास आकर्षण रहे. **आगरा**- प्राचीन प्रेम प्रकाश आश्रम काला महल में संत भक्तप्रकाशजी व केदारनगर स्थित नवीन प्रेम प्रकाश आश्रम में भगवंती दीदी के साथ आगरा वासियों ने बड़े उत्साह भक्ति के साथ जन्मोत्सव मनाया. **खैरथल**- रेत के टीले के ऊपर स्थित अमरापुर सदृश प्रेम प्रकाश आश्रम पर संतमुरलीधरजी के सानिध्यमें भक्तों की मौज रही जन्मोत्सव में. **इन्दौर**- मध्यप्रदेश की औद्योगिक राजधानी काटजू कॉलोनी में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर संत शम्भूलाल के सानिध्य में प्रेमियों का उत्साह देखतें ही बनता था. द्वारिकापुरी स्थित आश्रम पर संत नरेशप्रकाशजी ने भी जन्मोत्सव को प्रेमियोंके साथ मिलकर धूमधाम से मनाया. **गोंदिया**- सिंधी कॉलोनी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम जहां पर केन्द्रीय मुख्यालय अमरापुर के संत हरीशप्रकाशजी व्यवस्था कार्य देखते हैं, के साथ जन्मोत्सव मेले में संत जितेन्द्रजी (जीतू), संत गंगा प्रेम प्रकाशी व भक्त वरियलदास ने भी प्रेमियों को सद्गुरू टेऊँराम ज्ञानगंगा का पान कराया. **डबरा**- अमरापुर के संत परसरामजी जो कि आजकल डबरा आश्रम की व्यवस्था देख रहे हैं, के नेतृत्व में डबरा वासियों ने प्रेम श्रद्धा भक्ति के साथ जन्मोत्सवका आनंद लिया. संत हरिओमलाल जी व संत प्रतापरायजी भी जन्मोत्सव में सम्मिलित हुये. **अलीगढ़**- प्रेम प्रकाश आश्रम ट्रस्ट द्वारा नई बस्ती स्थित आश्रम में पंचदिवसीय मेले में अलीगढ के सपूर्ण सिंधी समाज ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लेकर जन्मोत्सव मनाया.

हरिद्वार-भोपतवाला स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर बाहर से आये हुये व स्थानीय प्रेमियों ने संत रमेश प्रकाशजी व संत नन्दलाल प्रेम प्रकाशी के सानिध्य में जन्मोत्सव मनाया. यहां पर पांचों दिन नियमित अन्नक्षेत्र के अतिरिक्त विशेष अन्नक्षेत्र का आयोजन भी प्रमुख रहा. **रायपुर**-शैलेन्द्र नगर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर पंचदिवसीय मंगलोत्सव में प्रेमियों ने मंगलगीत गायन के साथ दीपोज्वलन भी किया. **धमतरी**- माता लक्ष्मीदेवीजी के यहां पर व भाई जागणमल के गुरूद्वारे में प्रेमियोंने जन्मोत्सवका आनंद लूटा. बालक बालिकाओं के मंगलगीत गायन पर प्रस्तुत नृत्य सराहनीय रहे. बच्चों को पुरूस्कृत भी किया गया. **भाटापारा**- माता देवालयपारा स्थित आश्रम पर मंगल महोत्सव में सम्मिलित प्रेमियों की खुशी तो बस देखने लायक थी. बालक बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत लघु नृत्य नाटिकाएं प्रशंसनीय रही. **मुरैना**- आचार्यश्री के पुराने प्रेमी श्री वसणारामजी के परिवार वालों ने सन्त प्रतापराय जी के साथ परम्परानुसार जन्मोत्सव को बड़े ही भावपूर्ण भजन गायन दीपो के प्रकाश के साथ मनाया. **भोपाल**- संत हिरदाराम नगर बैरागढ़ स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में २३ जून को दादा हासानंदजी के साथ बड़ी संख्या में प्रेमियों ने आचार्यश्री के प्रकटोत्सव में भाग लिया **ब्यावर**- नंदनगर स्थित आश्रममें प्रकटोत्सव मेले की छटा ही अद्भुत थी **टोंक**- डॉ. कैलाश वदलानी के निवास पर १६ जून को संत मनोहर प्रकाशजी के सानिध्य में पंचदिवसीय मेले की शुरूआत. समापन पर दोहा स्मरण प्रतियोगियों का दोहा गायन-पुरूस्कार वितरण के साथ प्रभातफेरी इत्यादि कार्यक्रमों में प्रेमियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया. **कटनी**- संत रमेशप्रकाशजी के सानिध्य में जन्मोत्सव पर आनंद छाया रहा कटनी आश्रम पर. **भीलवाड़ा**- बापू नगर स्थित आश्रम पर संत झामनदासजी के साथ स्थानीय वासियों ने मंगलमहोत्सव की मौज लूटी. २० जून को विशाल शोभायात्रा, २३ जून को हवन, ध्वजावंदन, सन्तभक्तों के लिए समष्टि भण्डारा जन्मोत्सव के खास आकर्षण रहे. **अहमदाबाद**- अम्बावाड़ी स्थित आश्रम पर संत हंसप्रकाशजी व कुबेरनगर स्थित प्रेम प्रकाश बंसत कुटीर पर संत सुश्री पुष्पा बहन के साथ प्रेमियों ने जन्मोत्सव का आनंद लिया. **सूरत**- रामनगर कॉलोनी स्थित आश्रम पर सूरत वासियों ने आचार्यश्री का प्राकट्य बड़े समारोह पूर्वक मनाया. **पूना**- अग्रवाल कॉलोनी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर संत अनंतप्रकाशजी के सानिध्य में भक्तों ने जन्मोत्सव का आनन्द लिया. **फरीदाबाद**- प्रेम प्रकाश आश्रम गोपी कॉलोनी में संत किशोरप्रकाशजी के साथ मेले का आनंद प्रेमियों को मिला. **पलवल**- यहां के प्रेमियों के प्रेम का तो कहना ही क्या. मंगल गीत गाते अघाते ही नहीं. ऐसे में समय का भान किसको रहेगा. **हिसार**- प्रेम प्रकाश सत्संग मंदिर में माता रामप्यारी जी व सभी बुजुर्ग प्रेमियों के साथ सभी आयुवर्ग के प्रेमियों ने मंगलोत्सव में ऐसी तो धूम मचायी कि क्या

कहना. भंडारे की ऐसी तो बरकत-वहां तो वहां बाहर मार्केट में भी दुकानदारों को जाकर भण्डारे का प्रसाद वितरित किया गया, पशु पक्षियों के पश्चात् भी अंत में फिर भी बच ही रहा. **राजपुरा**- पंजाब राजपुरा प्रेम प्रकाश मंदिर में श्री गुरदास सचदेवा ने प्रेमियों सहित आचार्यश्री का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया. **बुरहानपुर**- प्रेम प्रकाश चेरीटेबल ट्रस्ट द्वारा संत शम्भूलालजी के सानिध्य में २३ से २६ जून तक प्रेम प्रकाश आश्रम व सिंधी धर्मशाला में जन्मोत्सव कार्यक्रम आयोजित हुये. भव्यतम शोभायात्रा से हुआ सारा नगर टेऊँराम बाबा की भक्ति से ओतप्रोत. सत्संग सभाओं व झूलनोत्सव (छठी) में उमड़ा भक्तों का समूह. **कानपुर**- कौशलपुरी स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में संत घनश्यामदास जी के साथ प्रेमियों ने जन्मोत्सव का आनंद लिया. **वाराणसी**- सिंधु नगर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम जहां भक्त महादेव के साथ प्रेमियों का उत्साह दर्शनीय था. **फैजाबाद**- रामनगर कॉलोनी प्रेम प्रकाश आश्रम भक्त भावनदास के नेतृत्व में प्रेमियों ने जन्मोत्सव की मौज ली. **लखनऊ**- गोलागंज बारूदखाना स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम में भी बड़ी संख्या में प्रेमियों ने जन्मोत्सव का आनंद उठाया **जकार्ता**- संतजयदेवजी महाराज, संतनरेश प्रकाशजी, भक्त केवलराम के साथ ५०० से भी अधिक प्रेमियोंने जन्मोत्सव श्रद्धाभक्ति के साथ मनाया. **स्पेन**- लासपालमास, तनरीफ इत्यादि नगरों में स्थित प्रेम प्रकाश मंदिर की शोभा जन्मोत्सव अवसर पर देखने लायक थी. प्रेमियों के प्रेम व भक्ति का तो कहना ही क्या. **हांगकांग**- कॉवलान स्थित प्रेम प्रकाश मंदिर में संत नामदेवजी के सानिध्य में प्रेमियों ने जन्मोत्सव का आनंद लिया.

इसी प्रकार उल्हासनगर, मुंबई, कोल्हापुर, धुलिया, जलगांव, नासिक, पिम्परी, जालना, औरंगाबाद, अहमदनगर, भंडारा. तिरोड़ा, सिवनी, बालाघाट, खंडवा, जबलपुर, जोधपुर, नसीराबाद, सीकर, गांधीधाम, नाडियाद, नवसारी, दाहोद, राजकोट, भावनगर, चैन्नई, कलकत्ता के अतिरिक्त विदेशों में अमेरिका, मनीला, बैकांक, सिंगापुर, दुबई व पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित आश्रमों पर भी बाबाजी के जन्मोत्सव की मौज रही.

५० फुट लम्बी खण्डूगांव झांकी

आचार्य श्री की पावन पवित्र जन्म भूमि खण्डूगांव की आकर्षक झांकी श्री अमरापुर धाम के सत्संग हॉल में सजाई गई. जिसमें झोपड़ियाँ-कुआँ-सिन्धु नदी-अरहट-गौशाला-पेड़-पौधे गाँव का नजारा रेत एवं बाबाजी की ८ फुट लम्बी आदमकद प्रतिमा साक्षात् खण्डूगाँव में विराजमान की गई थी. खण्डू गाँव की मनमोहक झांकी के दर्शन करने के लिये देश-विदेश के प्रेमी एवं पूरा गुलाबी नगर उमड़ पड़ा. सभी भक्तजनों ने इस सुन्दर झांकी का दर्शन किया. झांकी को सजाने का कुशल कार्य सांगानेर के श्री रामकिशोर शर्मा व उनके सुपुत्रों ने बड़े लग्न व मेहनत के साथ किया.

गुलाबी नगर के घर-घर में दीपोत्सव

पावन श्री अमरापुर धाम जयपुर में प्रतिदिन दीपमाला रंगोली से स्वास्तिक आकार को श्रृंगारित किया गया. इसी के साथ २३ जून बुधवार को बाबा के प्रकोटत्सव पर घर-घर दीपोत्सव श्रद्धा उल्लास के साथ मनाया? जयपुर के नमक मण्डी में रहने वाली लवीना दुर्गानी द्वारा पूरे आंगन को दीपमाला-रंगोली से सजाकर सतनाम साक्षी मंत्र को बड़े ही सुन्दर ढंग से लिखकर सजाया. गुरूनानक कालोनी के बालक मण्डली द्वारा १८ प्रकार के व्यंजन बनाकर भोग प्रसाद वितरण किया गया. गुरू गोविन्दसिंह कालोनी, सिन्धी कालोनी, मालवीय नगर, मानसरोवर, अग्रवाल फार्म, ब्रह्मपुरी, मजदूर नगर आदि कालोनीयों में विशेष दीपमाला लाईट रंगोली प्रसादी वितरण, महाप्रसादी भोग, आरती, आंगन में सुन्दर सजावट करके महाराज श्री का प्रकटोत्सव धूम-धाम के साथ मनाया.

नाहरी का नाका में रहने वाले रोचवानी परिवार एवं अन्य गुरू भक्त प्रेमियों ने विशेष रूप से पूरी कालोनी का श्रृंगार किया. गुलाबी नगरी में मानों दूसरी दीपावली मनाई जा रही हो. इसी प्रकार पुरे विश्व में आचार्य श्री का प्रकाटोत्सव श्रद्धा-भक्ति-उल्लास प्रेम के साथ मनाया गया.

गुलाबी नगर में जगह-जगह मनाया बाबा जी का प्रकटोत्सव

आदर्शनगर में स्थित अमरलोक धाम, सिन्धी कालोनी के स्वामी सर्वानन्द पार्क में श्री चेलाराम, माता कृष्णा व बालस्वरूप टेऊँराम का साक्षात् दर्शन करने को मिला, प्रेम प्रकाश सत्संग भवन सांगानेर, गुरूनानक कालोनी, गुरू गोविन्दसिंह कालोनी, नाहरी का नाका, झूलेलाल मन्दिर मानसरोवर. मालवीय नगर आदि कालोनियों में बड़े श्रद्धा भक्तिमय वातावरण के साथ बाबा टेऊँराम जी महाराज का ११८ वां प्रकटोत्सव मनाया गया.

बालस्वरूप बाबा टेऊँराम का छठी महोत्सव

अवतार कोटि में आऐ बालस्वरूप बाबा टेऊँराम जी महाराज का छठी महोत्सव २८ जून सोमवार को श्री अमरापुर धाम सहित पूरे विश्व में जोर-शोर के साथ मनाया गया. खीर प्रसादी, झूला झांकी और बधाई गीत-शहनाई वादन एवं मंगलगान. पावन श्री अमरापुर धाम जयपुर में २८ जून सायंकाल की ताम्र लालिमा का सौम्य मनोरम दृश्य, सत्संग हॉल के बीचों-बीच सुन्दर सा झूला, जिसमें चहुं ओर से अशोक पत्र, मोगरा-गुलाब पुष्प, चमकीली जरकीन और उसमें विराजमान बाल स्वरूप बाबा टेऊँराम की मनोहारी प्रतिमा. मानो साक्षात् दर्शन दे रही हो. अग्रभाग में दीपो की सजावट, लाईटों की जगमगाहट, महकती धूप बत्तीयों की सुगंध, पुष्पों का श्रृंगार, ५१ भक्तों द्वारा सामूहिक महाआरती के दिव्य दर्शन करने के पश्चात् मन पुनः पुनः ऐसे दर्शनों के लिये लालायित हो रहा था. ऐसे ही लीलाधारी के समक्ष सन्त महात्माओं ने बधाई गीत गाये-झूल रहे सांई टेऊँराम-सुनहरे पलने में, तन मन से नाच रहे-देव और देवियां. हजारों श्रद्धालुओं ने बाबा के बालस्वरूप के दर्शन के पश्चात् खीर प्रसादी का प्रसाद पाया.

12 वर्षों बाद सद्गुरू महाराज का अपने शहर में दर्शन कर भक्त हुये गद्गद्

यात्रा दर्शन

अजमेर में स्वामी टेऊँराम जयंती की धूम

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व संतमण्डली का देशाटन

अहमदनगर (7 से 9 जून तक)

स्वामी जीवनमुक्तजी महाराज का वार्षिक उत्सव

जयपुर से अमरापुर वाहन द्वारा आगरा रेलवे स्टेशन आकर कर्नाटक एक्सप्रेस से रात्रि ११ बजे अहमदनगर के लिये संतमण्डली के साथ प्रस्थान किया. ७ जून को अहमदनगर पहुंचने पर सैकड़ो की संख्या में प्रेमियों ने प्लेटफार्म पर उपस्थित होकर सत्गुरू महाराज जी का भव्य स्वागत किया. पूज्य स्वामी जीवनमुक्तजी महाराज का २५वां वार्षिकोत्सव प्रेम प्रकाश आश्रम, पार गली, मालीवाड़ा में सत्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में मनाया गया. इसी के अंतर्गत ८ जून शाम को ५ बजे आश्रम से एक विशाल जलूस निकाला गया, जिसमें सत्गुरू टेऊँरामजी महाराज, भगवान झूलेलाल, शंकर भगवान, रामभक्त हनुमान, राधाकृष्ण के स्वरूपों की सुदंर झांकियां दर्शायीं गयीं. नगर के प्रमुख मार्गों से होता हुआ जलूस रात्रि ८.१५ बजे आश्रम पर विसर्जित हुआ तत्पश्चात् पल्लव पाकर उत्सव आरंभ हुआ. ९ जून को प्रातःकाल सत्संग पाठों का भोग तत्पश्चात् आम भंडारा हुआ जिसमें अपार जनसमूह ने भजन भोजन भंडारे का प्रसाद पाया. बिजली भक्त, लख्मीचंद कव्वाल, भक्त माणिकलाल द्वारा सारी संगत को भजनों का मधुर आनन्द दिया गया. सायंकाल ५ से ८ बजे तक सत्संग का कार्यक्रम रहा जिसमें भक्त मूलचंद, संत संजय, संत श्रीमुक्त, संत हरिओमलाल के पश्चात् पूज्य गुरूवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में स्वामी जीवनमुक्तजी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला अंत में पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया. तत्पश्चात् सारी संगत व संतमण्डल द्वारा सत्गुरू टेऊँराम धुनी का सामूहिक गायन ऐसा तो हुआ कि नर-नारी, बच्चे-बूढ़े सभी भाव-विभोर होकर नाचने लगे.

औरगांबाद (10 जून)

१० जून को प्रातः ७ बजे अहमदनगर से चलकर पूज्य सद्गुरू महाराज जी संत मण्डली सहित दोपहर १ बजे औरंगाबाद सड़क मार्ग द्वारा पहुंचे. जहां पर सिंध में चक शिकारपुर के प्रेमी भक्त किशोर व पुरूषोत्तम लौंगानी परिवार के यहां पर प्रवास भोजन का कार्यक्रम रहा. यहां पर भगवान शंकर का धृष्णेश्वर ज्योर्तिलिंग मंदिर है के दर्शन किये गये व ऐलोरा गुफाओं का भी मनोहारी दर्शन किया. यह वह स्थान है जहां भगवान शंकर की प्रतिमा व रथ को पहाड़ो पर ही पत्थरों से काटकर ७०० वर्षों के अथक श्रम द्वारा निर्मित किया गया है.

जालना (11 जून)

११ जून को प्रातः औरंगाबाद से चलकर सड़कमार्ग द्वारा जालना शहर पहुंचे. जहां पर श्री जाड़ामल वलरमल जी प्रेमियों सहित सत्गुरू महाराजजी के अगवानी हेतु नगरद्वार पर उपस्थित थे. श्री जाड़ामलजी के यहां पर प्रवास व भोजन की व्यवस्था की गई थी. सायंकाल ४ बजे माता देवीबाई आश्रम व विशाल गौशाला के दर्शन किये इसके पश्चात् सिंधी धर्मशाला में बने नवीन हॉल का रिबिन काटकर सत्गुरू महाराजजी द्वारा महूरत किया गया. यहां पर शादी विवाह सत्संग आदि के सामाजिक कार्य सम्पन्न होते हैं एवं यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था भी सुंदर है. औरंगाबाद व जालना शहरों में १२ वर्षों के उपरांत सत्गुरू महाराज व सन्तमण्डली का आगमन हुआ है. अपार जनसमूह ने सत्संग दर्शन का लाभ प्राप्त किया समीपस्थ कई शहरों से भी प्रेमियों ने आकर सेवा सत्संग दर्शन का लाभ लिया. रात्रि ११ बजे चलकर दोपहर ११ बजे मुंबई पहुंचे.

मुबंई (12 से 14 जून तक)

खार व मुबंई आश्रम पर मुबंई वासियों को तीन दिवसीय यात्रा के अंतर्गत ज्ञानामृत का पान कराया.

अहमदाबाद (15 जून)

मणीनगर में एक प्रेमी भक्त के घर पर विवाहोत्सव के उपलक्ष में सद्गुरू महाराज व संतमण्डली ने चरण पखारते हुये आर्शीवचनों से शादी वाले घर को खुशियों से सराबोर कर दिया.

जयपुर (16 से 19 जून तक)

परम पावन गुरूधाम अमरापुर स्थान में प्रेमियों को दर्शन सत्संग का लाभ सद्गुरू महाराज व संतमण्डली के सानिध्य में मिला.

अजमेर (20 से 23 जून तक)

श्री अमरापुर धाम के बाद सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज आचार्य श्री का पवित्र जन्मोत्सव प्रतिवर्ष दिल्ली गेट स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर प्रमुखता से मनाते थे. उसी परम्परा को सद्गुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज, सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने कायम रखा. अब उसी परम्परा का पालन करते हुए श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज २० जून को दिल्लीगेट स्थित आश्रम पर जन्मोत्सव में सम्मिलित होने हेतु संतमण्डली के साथ पहुंचे, जहां पर संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानंदजी महाराज के नेतृत्व में बड़ी

संख्या में उपस्थित प्रेमियों ने पूज्यश्री का पुष्पवर्षा करके जयघोष के साथ आत्मीय स्वागत किया.

आश्रम में १६ जून को प्रातः ८ बजे गणपति पूजन करके यज्ञ आरंभ किया गया. २० जून को प्रातः ७ बजे पाठों का शुभारम्भ हुआ, सायं ४ बजे पूज्य लालसाहब की ज्योति स्वामी ब्रह्मानंद शास्त्री एवं सद्‌गुरू महाराज ने प्रज्जवलित कर सायं ५:३० बजे जुलुस का शुभारम्भ किया. अमरापुर रथ पर सुशोभित सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, स्वामी ब्रह्मानंदजी महाराज के विराजमान होते ही सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम की जयघोष के साथ शोभायात्रा का आरंभ हुआ. शोभायात्रा में सद्‌गुरू महाराज व ईश्वर के विविध अवतारों की झांकियों को सजीव रूप से सजाया गया था. इस भव्य शोभायात्रा में शहर एवं बाहर से आये हुये हजारों भक्त हरिनाम संकीर्तन की मस्ती में झूमते हुये चल रहे थे. शोभायात्रा का परिक्रमा मार्ग में अनेक स्थानों पर भव्य स्वागत किया गया.

२१ जून को प्रातः ७ से १० बजे तक १०८ बच्चों को सामूहिक यज्ञोपवीत (जनेऊ) संस्कार पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद शास्त्रीजी ने सम्पन्न कराए. यज्ञोपवीत संस्कार से संस्कारित बच्चों को सद्‌गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज एवं स्वामी ब्रह्मानंदजी महाराज ने प्रेरणादायी शिक्षाएं देते हुये आशीर्वाद दिया. २३ जून तक प्रतिदिन प्रातः सायं सत्संग ज्ञानामृत का पान हजारों प्रेमियों ने पूर्ण एकाग्रचित होकर भक्तिभाव के साथ किया. २३ जून को ५६ भोग, महाआरती, दीपोज्वलन व आम भंडारा कार्यक्रम के साथ सायंकालीन सत्संगोपरांत पल्लव पाकर महोत्सव का समापन किया गया.

जन्मोत्सव अवसर पर अमृत बरसाते हुये पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने अपनी अमृतवाणी में कहा-

सद्‌गुरू महाराज ने सिन्ध प्रान्त के छोटे से खण्डू गांव में माता कृष्णा एवं पिता चेलाराम के घर अवतार धारण कर सिन्ध प्रान्त को पवित्र किया. माता कृष्णा पिता चेलाराम ने जब विद्या तालीम के लिए सद्‌गुरू महाराज को स्कूल में मास्टर आसुराम के पास भेजा तो स्वामी टेऊँराम ने बचपन में अपने पूर्व जन्मों के संस्कारो से मास्टर आसूराम को एक कामिल गुरू के रूप में पाकर उनसे नाम दीक्षा लेकर अपने माता-पिता परिवार धन सम्पत्ति एवं संसार के समस्त भौतिक सुखों से अपने मन की वृत्ति हटाकर वैराग धारण कर जंगलो/श्मशानों में एकान्त बैठकर प्रभु परमात्मा के नाम का सुमरन कर उन्हें प्राप्त कर आत्म ज्ञान की प्राप्ति कर हमें प्रभु परमात्मा को प्राप्त करने का मार्ग बतलाया एवं नाम की ओट लेकर प्रेम प्रकाश मण्डल विशाल वट वृक्ष की स्थापना की. उसे बहुत ही फूला एवं फलाया है.

इस वृक्ष पर बड़े-बड़े फूल-संत महात्माओं जैसे पैदा हुए जिन्होंने अपनी प्रेम-वैराग की सुगन्ध चारों तरफ फैलाकर प्रेम प्रकाश मण्डल का प्रचार किया. जैसे कृष्ण भगवान अपनी बंसी बजाकर गोपीयों को घर से बुलाकर रास रचाये थे उसी तरह सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम महाराज ने भी प्रेम की बंसी बजाकर सिन्ध प्रांत के गांव-गांव/शहर-शहर में सत्संग रूपी रास अपने इकतारे से बजाकर प्रेमियों को सत्संग में बुलाते थे और उनके अविद्या में सोये हुए मन को जगाकर राम नाम के सुमरन में लगाकर उनको इस भवसागर से पार किया.

भजन- सत्संग सुन्दर रास रचाये, प्रेम किया प्रचारा.
सर्व जीवों के मन को मोहिया, बंशी बीन बजाये.
स्वामी सद्‌गुरू टेऊँराम आए-जिन सोये जीव जगाये.

भजन- हित वण जा गुल कनि गुलजारी,
बेहदि जिनि में आहि बहारी
सुंघण सां थे काजु सरे.
हीअ वणु त वढण खां अथव परे.

आगे सद्‌गुरू महाराज ने हमें समझाया कि जब तक आपके अन्दर हृदय में प्रभु परमात्मा को पाने की लगन श्रद्धा नहीं है तब तक आप प्रभु परमात्मा को प्राप्त नहीं कर सकते हैं. जैसे- पैट्रोल के बहुत से ड्रम भरे हुए हैं उनमें जब तक आग नहीं लगेगी जब तक कि उनमें कोई आग की चिन्गारी न लगे. अतः जब गुरू के प्रति मन में सच्ची श्रद्धा लगन पैदा होती है तब गुरू महाराज सत्संग की चिन्गारी हमारे हृदय में लगाकर अन्तर आत्मा की ज्योत जगाकर प्रभु परमात्मा को नाम सुमरन द्वारा प्राप्त करवाते हैं. हमें अपने सोए हुए मन को स्वयं ही जगाना है. उसके लिए गुरू कृपा प्राप्त करनी होगी.

संत महात्मा नाम सुमरन द्वारा ईश्वर को प्राप्तकर हमें भी ईश्वर से मिलाते हैं. पर इसके लिए हमें पुरूषार्थ करना आवश्यक है जिसमें कठिनाई अवश्य होती है जैसे गंगा नदी के सीधे प्रवाह में तैरने वाला थोड़ी देर में दूसरे किनारे पहुंच जायेगा परन्तु जब वह प्रवाह के विपरीत तैरेगा तो उसे बहुत कठिनाई होगी. उसी तरह यदि हम संसार के विषयों के साथ अपना जीवन गुजारेगें तो यह जीवन सरलता से गुजर जायेगा परन्तु जब इसके विषय भोगों को त्याग कर जीवन का गुजारा करेगें तो थोड़ी कठिनाई अवश्य होगी. इसलिए सद्‌गुरू महाराज एवं संत महात्माओं ने भी संसार के सारे भौतिक सुख त्याग कर कठिन तपस्या कर प्रभु परमात्मा को प्राप्त किया.

भजन- जागनि सारी रति जोगी जुहिदु करे था जोगु कमाइन
रही जंगल में धूणा लाइनि, नेहि मचनि ते विरह वसाईन
बी ना कनि का ताति जोगी रूअन्दे रूअन्दे रामु रीझाईन

दोहा- कहे टेऊँ तुम चेतले अब कुछ बिगड़ी नाहिं

दया धर्म शुभ कर्म कर हरि सुमरो मन मांहि.

भजन- दिसी दुनिया जा रंग तमाशा लोभ लहर में मतां लुटीं
दुनिया में सुख मिलणो ना आहे छोन दुनिया खां धार रहीं.
सुमरण कर गुरू मंत्र जो सुमरन कष्ट मिटाईदों.
धीरज धर मन मुंहिजां
सद्गुरू कष्ट मिटाईदों बेड़ा पारि लगाईदों.

यह शरीर नाशवान है संसार के समस्त भौतिक सुख अस्थाई हैं जो अन्त समय में साथ नहीं जायेंगे इसलिए हमें ऐसी वस्तु प्राप्त करनी चाहिये. जो अन्त समय में हमारे साथ जाये वह गुरू के नाम सुमरन सतकर्मों के कार्य जो अन्त समय में हमारे साथ जायेंगें. हमें अपने जीवन का एक एक श्वास गुरू द्वारा दिये गये नाम सुमरन में लगाकर मैं एवं मेरा का अहंकार मिटाकर निहठाई कर अपना मानुष जीवन सफल बनाना चाहिये.

स्वामी ब्रह्मानन्द शास्त्री ने हमें बतलाया कि सद्गुरू स्वामी टेऊँराम ने बचपन में ही उच्च विचार एवं सादा जीवन एवं गुरू की आज्ञा एवं मर्यादा से रहकर प्रभु परमात्मा को प्राप्त कर आत्म ज्ञान की प्राप्ति की.

भजन- थोरे में मन करि गुजिरानु, करिज घणीअ सां करि तूं पासो.
घुरिज घणीअ में दुख ही दुख आहि,
घुरिज घटाइण में सभु सुख आहि.
घुरिजूं चित खे कनि परेशान, दीनु बणाइनि दई दिलासी.
थोरे में मन करि गुजिरानु

इसलिए हमें संसार के भौतिक सुखों से अपनी वृत्ति हटाकर नाम सुमरन कर सुख शान्ति की प्राप्ति करनी चाहिये इसके लिए गुरू की शरण में जाकर उनकी आज्ञा एवं मर्यादा में रहकर यह सब प्राप्त किया जा सकता है. सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज धन पदार्थों से दूर रहते थे. संत ब्रह्मानन्दजी महाराज ने बतलाया कि हैदराबाद में रूपचंद प्रेमी रहता था जिस पर कोई मुसीबत आई और उसने गुरू महाराज के चरणों में टेकर मुसीबत दूर करने की प्रार्थना की और मन में संकल्प किया कि मुसीबत दूर होने पर १००००/- गुरू महाराज को दान दूंगा. जब मुसीबत दूर हुई तो उस प्रेमी ने गुरू महाराज को १०८००/- दान दिया गुरू महाराज ने कहा इस पैसे को मण्डल के सत् कार्यों में लगाओ उस पैसे से आश्रम में माताओं के लिए कुटियाओं का निर्माण करवाए. गुरू महाराज के भण्डारे अखण्ड होते हैं. हम उनसे जो भी धन पदार्थ मांगे वो सब मिलते हैं परन्तु हमें उनसे ऐसी वस्तु मांगनी चाहिये जो हमारे साथ अन्त समय में साथ जाये वह है सुमति का दान. गुरू महाराज के अखण्ड भण्डारे में से हम जितना लेगें उससे उनके भण्डारे कम नहीं होगें वह अखण्ड है. जैसे समुद्र में से दो लोटे पानी निकाला तो भी समुद्र का पानी ज्यों का त्यों रहेगा. सत्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराजजी लोक परमार्थ एवं जीवों के उत्थान हेतु अवतार धारण कर शिवोहम नाम मन्त्र की ओट लेकर प्रेम प्रकाश मण्डल की स्थापना कर अपना नाम सारे विश्व में अमर कर गये.

–मोहन शिवनानी, अजमेर से

जयपुर (24 से 26 जून तक)

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में प्रेमी भक्तों की प्यास पूरी करते हुए सद्गुरू महाराजजी व संतमण्डली ने २७ जून को प्रातः सीकर के लिए प्रस्थान किया.

सीकर (27 से 29 जून तक)

सद्गुरू महाराज व संतमण्डली का २७ जून को दोपहर लगभग १ बजे सीकर आगमन हुआ. देवीपुरा रोड़ से पूज्य स्वामीजी व संतमण्डली का भव्य स्वागत करते हुये एक बड़ी वाहन रैली में आश्रम पर लाया गया. सद्गुरू महाराज के आगमन की खुशी में सायं ६ बजे आश्रम से एक विशाल शोभायात्रा बैंडबाजों व झांकीयों के साथ निकाली गई. दिव्य सत्संग समारोह में प्रतिदिन प्रातः ८ से ११ व सायं ५ से ८ बजे तक स्वामीजी व संतमण्डली के मुखारबिंद से निकली ज्ञानगंगा का पान हजारों भक्त प्रेमियों ने पूरे मनोयोग के साथ किया. समस्त कार्यक्रमों की सेवा व्यवस्था श्री प्रेम प्रकाश नवयुवक मंडल व स्वामी टेऊँराम आश्रम ट्रस्ट द्वारा की गई.

जयपुर (30 जून से 2 जुलाई तक)

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में गुरू पूर्णिमा महोत्सव सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के पवित्र सानिध्य में संतमण्डली व भक्तों ने श्रद्धापूर्वक मनाया.

दिल्ली (2 जुलाई)

श्री अमरापुर स्थान जयपुर से २ जुलाई को दोपहर २:३० बजे चलकर सायं ७ बजे दिल्ली पहुंचे जहां से रात्रि १२ बजकर ५ मिनट पर इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विमानतल से विमान द्वारा बैकांक के लिए रवाना हुये.

महर्षि सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का वर्सी महोत्सव
मंगलवार १७ अगस्त से शनिवार २१ अगस्त २००४ तक
श्री अमरापुर स्थान जयपुर सहित सभी आश्रमों में मनाया जायेगा.

गुरू बिन रंग न लाग ही - गुरू बिन ज्ञान न होय.

गुरू पूर्णिमा पर्व पर हवन, ध्वजावंदन, अभिषेक, पूजा-अर्चना

अमरापुर धाम जयपुर- व्यास पूर्णिमा के नाम से विख्यात ये पर्व गुरू-शिष्य परम्परा को सदैव कायम रखता है. इस दिन सभी गुरू-शिष्य के समक्ष जाकर पूजा अर्चना कर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं. गुरू भक्ति या गुरू सुश्रूषा मानव मात्र का कर्तव्य है. स्वाभाविक रूप से प्रत्येक मनुष्य के प्रथम गुरू माता, पिता द्वितीय और तीसरा स्थान आता है गुरू का. जो हमें आध्यात्मिक शिक्षा देते हैं. आचार्य का नाम आते ही हमें स्मरण होता है आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज का. आचार्य की सेवा करने से मनुष्य " भूः भुवः स्वः" तीनो लोकों को जीत लेता है. माता की भक्ति से इस लोक को, पिता की भक्ति से मध्यलोक को और गुरू की भक्ति से मनुष्य ब्रह्मलोक को प्राप्त करता है.इन तीनों की सेवा को बड़ा भारी तप कहा गया है.

माता-पिता के शास्त्रीय ज्ञान के अभाव में गुरू परम्परा में आचार्य का विशिष्ट स्थान समाज में बना है.उसीके स्मरण हेतु प्रति वर्ष गुरू पूर्णिमा का धर्म उत्सव मनाया जाता है. ऐसे महान गुरू पूर्णिमा के पर्व को श्रीदरबार में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पवित्र अध्यक्षता में २ जुलाई शुक्रवार को मनाया गया. प्रातः ५:३० बजे पूज्य स्वामीजी सन्तों के साथ श्री मन्दिर में आये. स्वामीजी व सन्तों द्वारा श्री मन्दिर में स्थापित आचार्यश्री व सद्गुरूओं की प्रतिमाओं का पंचामृत से अभिषेक करके नूतन वस्त्रों व आभूषणों से स्वरूपों को अलंकृत किया गया. फिर स्वामीजी ने आचार्यश्री व गुरूजनों को तिलक, श्रीफल मिठाई का भोग लगाकर पूजा अर्चना की. समाधि स्थल व प्रदर्शनी स्थल पर भी महाराज श्री व सन्तों ने पूजन अर्चन किया. सत्संग परिसर में भक्तों से भरे सभागार को सम्बोधित करते हुऐ महाराजश्री ने नवरचित भजन सुनाते हुऐ कहा-



गुरू एहसान लख तुहिंजा,
भला से कीअं भुलायां मां
लखें तुहिंजू मेहरबानियूं,
भला से कीअं भुलायां मां

सत्संगोपरांत हवन कार्य सम्पन्न ध्वजा वन्दन का कार्यक्रम भी आज सम्पन्न हुआ. हवन कार्य के पश्चात् सद्गुरू महाराज जी सन्त मण्डली के साथ ध्वजामंच पर पहुंचे. शहनाई वादन की मधुर गूंज के साथ महाराजश्री ने ध्वजा का पूजन कर ध्वजा को सन्त नन्दलालजी को सौंपा जिन्होंने ६० फुट ऊँचे ध्वजास्तंभ पर जाकर " हम गीत सनातन गायेंगे " " सांई टेऊँराम तुहिंजो झण्डो झूले " सामूहिक भजन गायन के मध्य शिखर पर स्थापित किया. पुष्पों की बौछार से जहां गगन गुलाबी हो गया वहीं हजारों प्रेमियों की गगन भेदी जयघोष से क्षेत्र गुंजयमान हो उठा. नृत्य गायन के पश्चात् सभी भक्तों ने आम भण्डारे में सश्रद्धा पावन प्रसाद ग्रहण किया. इस अवसर पर देश विदेश के सैकड़ों श्रद्धालुओं के साथ ही जयपुर शहर के हजारों-हजारों प्रेमियों ने आचार्यश्री व गुरूदेवों का पूजन अर्चन कर आशीर्वाद प्राप्त किया. इसी प्रकार सम्पूर्ण भू-मण्डल में फैले प्रेम प्रकाशीयों ने गुरू पूजा का महापर्व गुरू पूजन करके मनाया.समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों की आभा आज और अधिक निखर रही थी. सभी आश्रमों पर भोर से देर रात्रि तक मेला लगा रहा.

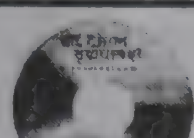
– गुडिया भरत जेठवानी जयपुर से



नई कैसेट्स

सांई टेऊँराम सुखधाम हरे

मधुर संकीर्तनीय कैसेट



अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातित कलाकारों की नई प्रस्तुति

बाबा सांई टेऊँरामजी महाराज की महिमा अपार है जितनी महिमा गायें उतनी कम है. गुरू पूर्णिमा के पावन पर्व पर पूज्य महाराजश्री द्वारा सांई टेऊँराम सुखधाम हरे (मधुर संकीर्तन) कैसेट को लोकार्पित किया गया. इस कैसेट में संकीर्तन को मधुर स्वर में देश के प्रख्यात कलाकार साधना सरगम व रवीन्द्र बिजुर ने गाया है. जिसे सुनने से ही वातावरण पवित्र होकर हृदय में भक्ति भाव का संचार हो उठता है.

भक्तिमय व कर्णप्रिय लगने वाली सांई टेऊँराम सुखधाम हरे कैसेट हर भक्त के लिए एक संग्रहणीय उपहार है.

सी.डी कैसेट मूल्य रू ३०, ऑडियो कैसेट मूल्य रू. २० प्राप्ति स्थल: श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

अन्य लोकार्पित वस्तुएं

१. सतनाम साक्षी सर्व आधार घंटी (डोर वैल) ५० रू.
२. सतनाम साक्षी अखण्ड धुनि यंत्र १०० रू.
३. दीवाल घड़ी (समय कंपनी) १२५ रू. व १५० रू.
४. सद्गुरू के पावन चरणों में ऑडियो कैसेट २० रू. सी. डी. कैसेट ३० रू.

प्राप्ति स्थल:-श्री अमरापुर स्थान जयपुर व सभी प्रमुख प्रेम प्रकाश आश्रम.

परिणाम घोषित

दोहा-स्मरण प्रतियोगिता

विजयी प्रतियोगियों की सूची

प्रतियोगिता में 3 से 80 वर्ष तक के 700 से अधिक भक्तों ने सुनाये दोहे

मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरू टेऊँरामजी महाराज के ११८वें जन्मोत्सव के उपलक्ष में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के केन्द्रीय मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान जयपुर द्वारा आयोजित दोहा स्मरण प्रतियोगिता में जयपुर शहर के अतिरिक्त अजमेर, भीलवाड़ा, गोदिंया, ग्वालियर, राजनांदगांव, अहमदनगर, इन्दौर, कोटा, खैरथल, मुरैना, टोंक, जोधपुर, वाराणसी आदि शहरों के अलावा सिंध पाकिस्तान व स्पेन के भक्तों ने भी प्रतियोगिता में उत्साहपूर्वक भाग लिया. ३ से ८० वर्ष तक के ७०० से भी अधिक भक्तों ने श्रद्धा उमंग के साथ १५ जून तक शांति के दोहे याद करके सुनाये.

संत श्री मोनूरामजी, श्री बी.डी. टेकवानी, मोहन शिवनानी, दीनदयाल वासवानी आदि निर्णायक मंडल ने दोहे स्वरबद्ध सुनकर प्रथम द्वितीय तृतीय एवं सांत्वना पुरूस्कार २२ जून की शाम को श्री अमरापुर स्थान में घोषित किये.

प्रतियोगिता में हमारे संतवृन्द व प्रतिनिधियों का भरपूर योगदान रहा जिन्होंने बड़ी मेहनत लगन से विभिन्न शहरों में प्रचार प्रसार करके भक्तजनों को दोहे याद करने के लिए प्रेरित किया. जयपुर मालवीयनगर में रहने वाली कर्मठ गुरूभक्त श्रीमती भावना पारवानी द्वारा ४५ बच्चों को दोहे याद करवाये गये. इन सभी सहयोगियों का हर वर्ष योगदान मिलता रहेगा. सभी भक्तजनों को आचार्यश्री का आशीर्वाद.

22 जून को घोषित परिणाम के अनुसार

स्वरबद्ध रूप से शांति के दोहे सुनाने वाले 52 प्रतियोगियों में से पुरस्कृत प्रतियोगी



पूज्य स्वामी स्वयंप्रकाशजी महाराज व संत मोनूरामजी सरिका पुरस्वानी को प्रथम पुरस्कार देते हुए →

प्रथम पुरस्कार

① सारिका पुरस्वानी 9 वर्ष प्रतापनगर सांगानेर, जयपुर

② मुकेश ककानी 13 वर्ष मालवीय नगर, जयपुर

③ गीता रामचंदानी 33 वर्ष शंकरनगर, जयपुर

द्वितीय पुरस्कार

① अंजलि केवलानी 8 वर्ष मालवीयनगर, जयपुर

② आरती साधवानी 12 वर्ष सिंधी कॉलोनी, राजापार्क, जयपुर

③ त्रिलोकचंद शर्मा 27 वर्ष भांकरोटा, जयपुर

तृतीय पुरस्कार

① अंशु बूलचंदानी 6 वर्ष सिंधी कॉलोनी, राजापार्क, जयपुर

② रोहित तीर्थानी 11 वर्ष बनीपार्क, जयपुर

③ सुनीता खेमचंदानी 53वर्ष कृष्णा कॉलोनी, जयपुर

विशेष पुरस्कार

① नारायणदास 60 वर्ष शास्त्री नगर, जयपुर

② ममता शिवनानी 21 वर्ष अजमेर

③ जया अजवानी 10 वर्ष आगरा रोड़, जयपुर

④ भारती आसवानी 6 घर्ष प्रतापनगर, जयपुर

⑤ दिव्या रामानी 6 वर्ष शास्त्रीनगर, जयपुर

प्रशंसनीय पुरस्कार

1. दीपिका सतवानी निर्माण नगर, जयपुर 3 वर्ष
2. हितेश रामानी, शास्त्री नगर, जयपुर 4 वर्ष
3. देवीबाई लुधानी (बुधर माँ) मालवीयनगर, 80 वर्ष

प्रेरक पुरुषार्थी भक्तजन

मालवीयनगर जयपुर– श्रीमती राजकुमारी लालवानी, श्रीमती भावना पारवानी, श्रीमती भारती खुशलानी, लाजवंती नरयानी, महेश किशनानी, रमा मोरानी, कविता आडवानी, सोना बच्चानी, मधु आजवानी, दिलीप कुमार, राजापार्क, जयपुर– भारती भागवानी, सिंधी कॉलोनी जयपुर– मीनू गुरबानी, माया लालचंदानी, भारती लालचन्दानी शंकरनगर जयपुर– सीमा उमरानी, प्रतापनगर, सांगानेर, जयपुर–भगवंती लालवानी, सांगानेर, जयपुर– कविता पुरस्वानी, रामगढ़ मोड़ जयपुर– मीना कलवानी, गोविन्दनगर जयपुर– सविता गुलवानी.

सांत्वना पुरस्कार प्राप्त प्रतियोगी

अमरापुर स्थान जयपुर-सांई प्रताप पुजारी, घनश्याम प्रेमप्रकाशी, रितेश प्रेमप्रकाशी, इन्द्र प्रेमप्रकाशी, ढालु प्रेमप्रकाशी, जय प्रेम प्रकाशी, गुड्डू प्रेम प्रकाशी, राजेश प्रेमप्रकाशी, महेश प्रेम प्रकाशी, महेन्द्र प्रेम प्रकाशी.

मालवीय नगर जयपुर- रेखा उड्डेरानी, पवन उड्डेरानी, जयवन्ती रामचंदानी, सुमित खुशलानी, खेमचंद मंगलानी, मुकेश खुशलानी, उमा नरयानी, हर्षा ज्ञानानी, सरिता मूलवानी, ज्योति थावानी, अंजलि केवलानी, मंजू खत्री, ज्योति खत्री, नेहा केवलानी, पूनम पारवानी, पिंकी नेभवानी, मनोज लालवानी, हेमलता लालवानी, चंद्रिका मोरानी, उषा सेनानी, कान्ता तुलसानी, कविता रेलवानी, रजनी बालचंदानी, मनीष बालचंदानी, भावना किशनानी, महेश किशनानी, चांदनी पहलाजानी, अनिता पहलाजानी, नीतू किशनानी, महेश भोजवानी, सीमा टेकवानी, पायल वासुजा, शालिनी खुशलानी, रजनी आहूजा, संगीता केसवानी, पद्मिनी वासुजा, चांदनी खत्री, बबली मनवानी, आशा थावानी, हंसा छबलानी, सोना मनवानी, टीना तारानी, मनिषा टबरानी, हनी, दिलीप थावानी, नीतू भोजवानी, कमला भावनानी, विद्या वासुजा, कमला सावलानी, अशोक किशनानी, रीटा बच्छवानी, अमित बच्छवानी, कमला केसवानी, दीपक मनवानी, सनी धर्मानी, शांति थावानी, इंदु नंदवानी, मोनू इसरानी, कांता इसरानी, कविता आड़वानी, कंचन लखानी, मीना भाटिया, लता इसरानी, ममता भाटिया, नन्दा भाटिया, सुनीता भाटिया, कविता वसंदानी, लतिका रोघा, दीपा लेखानी, भावना रावतानी, पुष्पा अडवानी, मोहित पारवानी, नीता लेखवानी, चांदनी केवलानी, तरूणा थमवानी, नरेश सोनी, कीर्ति विधानी, रितु मूलानी, कमलेश मेहरचंदानी, लता नारवानी, इंदु केवलानी, दिनेश रावतानी, माला रावतानी, ज्योति कलवानी, मोना खीमनानी, रजनी खीमनानी, भारती खीमनानी, नेहा खीमनानी, पूजा खीमनानी, आशा खीमनानी, लता खीमनानी, रवि कुंदनानी, सोनिया भोपानी, रमा मोरानी, दीपा मोरानी, दीपक कुंदनानी, चंद्रकाता लखानी, सतीश शीतलानी, जयवन्ती मोरानी, वर्षा धीरवानी, गायत्री मलिक, रूक्मणी देवी मानकानी, भगवानी आयलानी, सुनीता कलवानी, शगुन दुबे, खुशबू दुबे, लक्ष्मी चंदानी, चांदनी मंगतानी, वंदना मंगतानी, रेखा पोपटानी, सारिका भोपानी, भावना पारवानी, मोनिका पारवानी, संदीप पारवानी, ज्योति निशवानी, मनीषा हासनानी, जया भोपानी, प्रकाश जेठवानी, पिंकी भोपानी, हेमशिखा जेठानी, सोनी हसनानी, वीना हसनानी, अर्चना सोनी, मीनाक्षी हासनानी, एकता अरोड़ा, द्रोपदी जेसवानी, पारूल अरोड़ा, लीना हासनानी, हेमा शीतलानी, दिव्या टेकवानी, कांता थदानी, कमल थदानी, भारती लालवानी, पुष्पा उद्धवानी, रेखा मंगनानी, चन्दा पहलवानी, महेन्द्र ककानी, रीटा सावलानी, मीना डेटवानी, दिव्या डेटवानी, पूनम मोदीयानी, कविता सोढानी, सुमन ककानी, माया लालवानी, दीपक लालवानी, हेमंत अमरवानी, पूनम चंदवानी, यशिका बच्चानी, सोना बच्चानी, गीता फुलवानी, कोमल बाबलानी, अंजलि कालरा, दीपक जगवानी, गायत्री जसवानी, देवी मंगतानी, लता मेंघानी, रितु चंदनानी, महेश मेंघानी, बीना भावनानी, गुड़िया भरत प्रेमप्रकाशी, ज्योति थावानी, गीता खेमचंदानी, ममता आसवानी, लाजवंती नरयानी, कोमल टेकवानी, प्रतीक बच्चानी, पूजा जगवानी, पुनीत कटारिया, गीता पमनानी, पद्मा पमनानी, मुकेश ककानी, मुरलीधर पारवानी, कुणाल पारवानी, लवीना खुशलानी, पिंकी जसवानी, धनवन्ती खेमचन्दानी, रितु ग्वालानी, राहुल, मानसरोवर जयपुर-लता हासवानी, पुष्पा चन्दवानी, पूनम चन्दवानी, जितेन्द्र लालवानी, लक्ष्मी गुरनानी, मीना लालवानी, सोनी टहलानी, मीना आसवानी, ललिता लालवानी, हरि रामानी, बूलचन्द वरयानी, भारती वरजानी, आशा रामवानी, बीना चांदवानी, दयावंती वाधवानी, पूनम जसवानी, ज्योति नारवानी, दीक्षिता वाधवानी, मीना शामतानी, राजकुमारी तीर्थानी, निशा रामानी, चंद्रप्रकाश सुखवानी, कमल नावानी, मनीषा रामानी, मीना प्रेमप्रकाशी, दीपिका कोरानी, जया आसवानी, नीरज वाधवानी,अग्रवाल फार्म जयपुर-पार्वती बसन्तानी, नीलम बसन्तानी, नरेश कुमार बसन्तानी, जया बसन्तानी, कन्हैया बसन्तानी, माला देवी टिलवानी, माधुरी लालवानी, मोनिका गोरानी, कोमल ईसरानी, राजेन्द्र गोरानी, सुनीता गोरानी, लाजवंती थोरानी, धर्मेन्द्र मंगनानी, ज्योति मंगनानी, भावना टिलवानी, सोनी वाधवानी, अनिता टिलवानी, लता वाधवानी कंचन केवलानी, संगीता केवलानी, लीना आहूजा, पुष्पा

हेमानी, मोनिका सूर्यानी, प्रीति चंचलानी, सुनील आसनानी, भारती आसनानी, भारती खेमचंदानी, हेमा लखानी, कोमल लालवानी, रमेश सबनानी, वर्षा आलवानी, हेमलता आलवानी, पूनम आलवानी, गायत्री आलवानी, भारती भाटिया, नंदा आडवानी, नीरज वाधवानी, प्रतापनगर-सांगानेर जयपुर-हिना मंगतानी, पूजा गुवालानी, लता संगतानी, गीतान्जली मोटवानी, प्रिया मोटवानी, जयश्री राधवानी, वन्दना भक्तानी, पुष्पा भक्तानी, भारती पमनानी, बरखा गुरनानी, दीपा भागवानी, नीतू आहूजा, हर्षा चन्दनानी, विनिता मेंघानी, सोनम मेंघनानी, भारती आसवानी, त्रिलोक हरचंदानी, भगवंती लालवानी, साक्षी पायेदार, नितिन कुमार गुलानी, मुकेश संगतानी, पूजा ग्वालानी, बूली बाई ग्वालानी, विनीता बूलचंदानी, पूनम पारवानी, मनोज खूबचंदानी, कामना विधानी, संगीता मीरचन्दानी, उषा मीरचंदानी, नीलम भेरवानी, प्रदीप मीरचंदानी, वर्षा मीरचंदानी, नीतू आसवानी, लवली, मोनिका पुरस्वानी, सानिया पुरस्वानी, भारती पुरस्वानी, गीता जाजानी, **सिंधी कॉलोनी-आदर्शनगर-ज[illegible] नगर जयपुर**-भारती भागवानी, निशा भागवानी, राज [illegible]गवानी, माधुरी भागवानी, प्रदीप भागवानी, बीना भागवानी, कन्हैया भागवानी, अंजलि भागवानी, वर्षा भागवानी, साक्षी भागवानी, आरती साधवानी, पुनीता कोरजानी, कृष्णा लालवानी, हेमलता शिवनानी, पूनम प्रीतमानी, भारती प्रीतमानी, दीपा बाबानी, संगीता नरयानी अनुराधा नरयानी, प्रदीप प्रीतमानी, रवि नानकानी, दीपा नानकानी, सीमा नानकानी, लक्ष्मी जीवनानी, देविका वर्धानी, मीना मामनानी, हेमा चंदवानी, नैना मूलचंदानी, भरत नरयानी, मधु जीवनानी, लक्ष्मी सचदेवा, दीपिका मूलचंदानी, नेहा मूलचंदानी, अंशु मूलचंदानी, सीमा नानकानी, मीना नानकानी, [illegible]षा नानकानी, रोहित तीर्थानी, द्रोपती सेजवानी, लाजवंती [illegible]रवानी, मंजु सहजवानी, माया लालचंदानी, भारती लालचंदानी, [illegible]नू गुरबानी, वीना ज्ञानानी, महिमा चंदनानी, गीता टहलानी, [illegible]गा आलवानी, रेनू होतवानी, नानकी होतवानी, अनिता [illegible]वनानी, रेशमा दासवानी, नीरज संतानी, स्मिता गिरयानी, [illegible]रू शेवानी, रानी हरीश कुमार गोरयानी, दयालदास [illegible]नचंदानी, संगीता सोनी, दीपिका खानचंदानी, रशिका [illegible]नचंदानी, तमन्ना त्रिलोकानी, कुमार चन्दनानी, निशीता [illegible]रंग, वर्षा नानकानी, **शंकर नगर-ब्रह्मपुरी-गुरूनानक कॉलोनी-कंवरनगर,जयपुर**-पूजा गुरूनानी, पूनम खत्री, लाजवंती खत्री, गीता रामचंदानी, प्रकाश उमरानी, सीमा उमरानी, हेमलता टहलवानी, रेखा नावानी, गीता वासवानी, निशा रामानी, पूजा मनवानी, अंकिता उमरानी, दिव्या मनसुखानी, लता सिखानी, ज्योति केसवानी, अनिता किशनानी, दीपक किशनानी, प्रिया कौर, मालती मानवानी, पंकज गुरनानी, हितेश आसवानी, ऋचा मोटवानी, माया मेहर चंदानी, अनु झांगयानी, कमल झांगयानी, कोशल्या नंदलाल मंगलानी, पूजा पंजाबी, धनवन्ती जगतानी, रीमा निहलानी, वीना रामचंदानी, मनाली सबनानी, अनिता वाधवानी, जयश्री मेंघरानी, प्रिया मनवानी, **गोविन्दनगर जयपुर**-मूली केवलरामानी, लता नूनानी, सविता गुलवानी, तारा गुलवानी, रेनु मोहनानी, राजेश कुमार नावानी, लीला देवी मोटवानी, हेमलता मीरचंदानी, ममता मीणा, लता गुरनानी, लता आलवानी, भारती कोडमलानी, पायल कीर्तानी, **गूजर घाटी जयपुर**-रजनी लालवानी, पुष्पा टेकवानी, मीनाक्षी मंगलानी, वर्षा मंगलानी, कृष्णा नावाणी, अनिता नावाणी, पुष्पा पारवानी, **रामगढ़ मोड़ जयपुर**-हर्षा रध्यानी, दीपा केसवानी, जया कलवानी, भारती मामनाणी, मनोज मामनाणी, कविता, गुड़िया हरवानी, राजेश कुमार केसवानी, रूपा मोटवानी, दिव्या कलवानी, सुनीता केसवानी, पूनम पारवानी, नीलू शर्मा, **सवाई जयसिंहपुरा खोर जयपुर**-हेमा बाबानी, हेमलता बाबानी, **शास्त्रीनगर जयपुर**-वर्षा जयरामाणी, लक्ष्मी मामनानी, पायल मामनानी,प्रिया मामनानी, रेखा गुरनानी, दिव्या रामानी, हितेश रामानी, राधा रामानी, मीना मोटवानी, सीमा पारवानी, नारायणदास, विनीता भक्तानी, सपना सेवानी, **विद्याधर नगर जयपुर**-राजकुमारी रामानी, चांदनी धावानी, नीता रामानी, दीपा लधानी, **मुरलीपुरा स्कीम,झोटवाड़ा जयपुर**-वर्षा लखवानी, कविता रामचंदानी, डिम्पल रामचंदानी, सीमा वर्धानी, पूजा सोनी, दीपा वरदानी, ऋचा खत्री, दिव्या पारवानी, कविता शर्मा, मनीष करनानी, **नाहरी का नाका जयपुर**-गोपी दत्तवानी, नीता रामनानी, रेशमा रामनानी, लीलावंती राधानी, पुष्पा मेंघानी, सुरेखा राधानी, रेशमा सबदानी, भावना संगतानी, सोनी ज्ञानानी, रजनी सबदानी, **निर्माणनगर, भांकरोटा जयपुर**-हरीश सतवानी, मनीष सतवानी, विनोद सतवानी, शिल्पा सतवानी, विजय सतवानी,

मोनिका सतवानी, दीपिका सतवानी, ज्योति सतवानी, उषा सतवानी, विशाल सतवानी, अमित सतवानी, जयकुमार सतवानी, त्रिलोकचंद्र शर्मा, कृतिका टेकवानी, वरूण टेकवानी, इंदिरा बाजार, जयपुर-रजनी शीतलानी, चंदा शीतलानी, राणी शीतलानी, कविता मूलानी, निर्मला शीतलानी, चांदपोल बाजार, जयपुर-ऋतु लखानी, पायल कृपलानी, लता लालवानी, रजनी लालवानी, लता आलवानी, पूनम लालवानी, पुष्पा लालवानी, हेमा केवलानी,सिन्धी कॉलोनी, बनी पार्क, जयपुर-नीना तीर्थानी, हनिषा वच्छानी, दीपा वच्छानी, आशना वच्छानी, रोहित तीर्थानी, २२ गोदाम-मजदूर नगर, सोडाला, जयपुर-आरती शर्मा, राखी भोजवानी, विद्या लालवानी, मंजू लालवानी, विनीता भोजवानी, दीपिका भोजवानी, लवीना ज्ञानानी, भाविषा ज्ञानानी, जानकी ज्ञानानी, दीपा मोटवानी, लता मंघनानी, प्रकाश भोजवानी, कोमल सेतिया, जगतपुरा, जयपुर-धनवंती खेमचंदानी, अनिल दरवानी,अजमेर-ममता शिवनानी, आशा साहनी, नेहा झामनानी, वन्दना तोलानी, ज्योति नवलानी, प्रतीक देवनानी, दीपमाला वाधवानी, सुरेश शिवनानी, हरीश गिदवानी, श्रीमती रेनु लखवानी, पद्मा लालवानी, ऋतु साधवानी, निशा लखवानी, श्रीमती साक्षी रमनानी, श्रीमती दीपा विधानी, कविता विधानी, ग्वालियर-कु. सोनम वाधवानी, धीरज दयानी, कु. मीना लालचन्द लालवानी, काटजू कॉलोनी इंदौर-कलां माता, टीना लीलानी, वर्षा मंधवानी, माया कटारिया, कविता, रेनू बलवानी, इंदिरा बलवानी, पुरूषोत्तम कटारिया, भारती वाधवानी, दीपा लीलानी, सूरी माता, प्रीति, चंद्रा माता, पूजा छाबड़ा, ईश्वरी माता, ज्योति मकरानी, हेमा मकरानी, पायल नानकानी, हेमा मंधवानी, सपना सीतलानी, वर्षा सीतलानी, नंदा उधानी, कंचन होतवानी, पूजा कालरा, वर्षा कटारिया, दिव्या छाबड़ा, ज्योति कटारिया, द्वारकापुरी, इंदौर-दिशा प्रेमप्रकाशी, लक्ष्मी वाधवानी, लक्ष्मी वाधवा, कश्मोर, सिंध पाकिस्तान-श्रीमती सुशीला देवी मंधान, वाराणसी-श्रीमती लीना जाजानी, कुमारी हेमा छतवानी, सुनीता बसन्दानी, विशदास लालवानी, रश्मि लालवानी, मुरैना-श्री काशीराम अनन्य (रामायणी), राजकुमारी, श्रीमती रेखा तलरेजा, कोमल तलरेजा, भीलवाड़ा-पद्मा लालचंदानी, गौरी लखी, मधु लालचंद मोतियानी, कमला टहल्याणी, जया टहल्याणी, भावना तिलोकानी, भारती बहरबानी, यशोदा मंगतानी, वीना पारवानी, रिया खैराजानी, खैरथल-दीपिका, पूनम बाबानी, हेमलता, शालू, नीतू, ज्यो आढ़तानी, जया बाबानी, चित्तौड़गढ़-श्रीमती कमला ढालवा ब्यावर-कमला सर्वानी, रेखा धंजानी, सुनीता सर्वानी, इंदि भावना धंजानी, कमला सुनील लालवानी, अनिता, विश लक्ष्मी, रूपीदेवी, पुष्पा लालवानी, मीना, राजे पलवल-शशिबाला आर्य, मीरा कटारिया, कृष्णा काल शकुन्तला तनेजा, अनीता अरोड़ा, हथीन-कुन्ती बद बड़ौदा-निशा पहलाजानी, जोधपुर-लवली खिमानी, रे खिमानी, भावना बदलानी, दीपा बदलानी, कोमल तोला रिक्कू अठवानी, दिव्या बदलानी, कान्ता मनवानी, हेमल उषा कलवानी, मीनाक्षी मोरयानी, हेमलता चुगला धमतरी-श्रीमती लक्ष्मी पंजवानी, मायादेवी रोहरा, कु. पू पंजवानी, श्रीमती राजकुमारी पंजवानी, कु. ज्योति राजवा श्रीमती नीलम धनवानी, सुरेश कुमार पंजवानी, इन्दु छाब अहमदनगर-श्रीरामपुर-श्रीमती विमला खानचन्द बजा मिस हीरामनी श्रीचंद तलरेजा, श्री कालुराम सिंधानी, मि कोमल जीवतराम हीरानंदानी, मिस पूनम जीवतराम हीरानंदा मिस ईश्वरी चांडूमल तलरेजा, श्रीमती सिमरन बंसीला श्रीमती हेमा ओमप्रकाश चुग, श्रीमती मधुकिशोर चुग, कु वर्षा हीरानंदानी, तनरीफ, स्पेन-दया सुरेश हेमना टोंक-भागेश्वरी छंगाणी, कु. दीपिका रामचंदानी, कु. ज देतरानी, कु. कविता पंजवानी, देवी रामचंदानी, मीनू मनवा मीनू रामचंदानी, पूनम फुलवानी, पूजा दत्तवानी, सोन बालानी, त्रिलोक कुमार, रश्मि दत्तवानी, टीना बालानी, व भामनानी, राजनांदगांव-रीना उमरानी, नीरज मोटला रेशमा गिडलानी, वन्दना माधवानी, रिया उमरा सांभरलेख-रचना मानसिंघानी, गोदिंया-श्रीमती लाजव बजाज, श्रीमती उषा गोपलानी, श्रीमती रूकमणी शामला श्रीमती मीरा अंदानी, कु. विशाखा केसवानी, कु. सी वेडवानी, कु. कंचन वेडवानी, कु. मीरा गोपलानी, श्रीम ज्योती सावलानी, कु. नीलम चिमनानी, कु. अमित कटिया श्रीमती मंजू लालवानी, कु. उषा वाधवानी, कु. व सचदेव, कु. ममता छाबड़ा, कु. गीता बंसतानी.

सूचना– जिन भक्तजनों ने दोहा–स्मरण प्रतियोगिता भाग लिया है और उन्हें अभी तक पुरस्कार–प्रमाण न मिला हो वे संत मोनूरामजी से श्री अमरापुर स जयपुर में फोन नं.–0141–5107558 पर संपर्क

सांई टेऊँराम बाबा की लीलाएँ

चित्रकथा—६

चित्राकंन, लेखन-सुधा जौहरी, जयपुर



दिमागी कसरत

आध्यात्मिक वर्गपहेली-9

1	2	ॐ	3		4		5
6		7		ॐ		ॐ	
	ॐ		ॐ	8	ॐ	ॐ	
	ॐ		ॐ	9		10	
11	12		13		ॐ		ॐ
ॐ		ॐ		ॐ	14		15
16	ॐ	17		18	ॐ	19	
20						ॐ	

बाएँ से दाएँ :

१.संसार में आवागमन से मुक्ति. (२)
३.जनेऊ संस्कार, (५)
६.लक्ष्मीनाथ विष्णु. (४)
६.श्री वाल्मीकि द्वारा रचित रामचरितकथा. (४)
११.संत टेऊँराम के ज्येष्ठ भ्राता. (५)
१४.पुष्प-रज. (३)
१७.पुराणों में वर्णित एक पर्वत. (३)
१६..........में जीते जो मरे, तजे देह अभिमान.
कह टेऊँ संसार में, सो नर मुक्ता मान, संसार, (२)
२०.सद्गुरू टेऊँराम का मूलमंत्र व जीवन का सार, (४.२)

ऊपर से नीचे :

१.श्री कृष्णा के शीश पर शोभायमान रहता है. (५)
२.....जांके मन बसे;......बड़नि को चाहिये. छोटनि को उत्पात,(२)
३.संसार से विमुक्त व इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाला. (२)
४.मीरा की रचनाएं ; पैर. (२)
५.पाप,बुरे कर्म व दूषित मानसिकता की ओर ले जाने वाली प्रवृत्ति.(४)
७.उत्तम गंध ; पंडितों का समूह. (४)
८.गांधीजी के अन्तिम शब्द. (१.२)
१०.मृत्यु के देवता. (४)
१२.हवन में अर्पित सामग्री. (२)
१३.जो.......रटे सो भवसागर तरे.,
.....रटते रहो. जब लग घट में प्राण, (२,२)
१५.आकाश ; व्योम जिसमें सूर्य चन्द्र उदय. अस्त होते है. (३)
१६.राधा-कृष्ण व अन्य गोपियों के साथ रचाया गया नृत्य.(२)
१७.एक पक्षी, पार्वती की माता प्रथम नाम; तोता.....की कहानी (२)
१८.ढीला का विलोम, साक का उल्टा (२)

प्रस्तुतिः सुधा जौहरी, तिलकनगर, जयपुर

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-8 का सही हल

1 अ	2 व	ता	3 र	ॐ	4 दा	न	5 वी
6 हं	स	ॐ	7 वि	धा	ता	ॐ	णा
8 का	न	9 न	ॐ	ॐ	10 र	11 मा	ॐ
र	ॐ	र	ॐ	12 वी	ॐ	ध	ॐ
ॐ	ॐ	13 प	ति	त	14 पा	व	15 न
16 स	म्म	ति	ॐ	17 रा	म	ॐ	न्दी
गं	ॐ	ॐ	18 म	ग	र	ॐ	ग्रा
19 ति	रू	प	ति	ॐ	ॐ	20 य	म

आध्यात्मिक वर्गपहेली-८ (सही हल भेजने वालों के नाम-)

जयपुर से-राजेश्वरी टिलवानी,राजेश प्रेमप्रकाशी,ढालू प्रेमप्रकाशी,जय प्रेमप्रकाशी,मोना-यशिका बच्चानी,अशोक पुरस्वानी,मालादेवी टिलवानी,अशोक-सोनिया पुरूस्वानी,मुरलीधर-भावना परवानी,पिंकी दनवानी,गुडिया भरत जेठवानी,गीता प्रदीप जाजानी,अजमेर से-हरिश गिदवानी,अकलनगर से-श्रीमती गीता हरगुनानी,खैरथल से-पूनम-मावित्री बालानी,प्रेमप्रकाशी रूपा नोतानी,मोनू-पूनम रामलानी,नीतू-दीपक तलरेजा,भाटापारा से-आत्माराम गोइदानी,गांधीधाम से-जयवन्ती प्रेमप्रकाशी,इन्दौर से-हरीश बालानी,धमतरी से-सुरेश पंजवानी,दिनेश रोहित वाधवानी,कु.एकता नेहा वाधवानी,दीपा आहूजा,मोनल वाधवानी,लक्ष्मी पंजवानी,ज्ञानचंद वाधवानी,चापा से-वरियलदास प्रेमप्रकाशी,भानुप्रतापपुर से-माया प्रेमप्रकाशी,ब्यावर से-नेमराज गिदवानी,नीलम वाधवानी,खण्डवा से-कु.नीनू खेराजमल मोटवानी,चन्द्रभान गुरबख्शानी,सिवनी से-डाली चेनानी,पुष्पा मोहनानी,दीपा मोहनानी,रेनू राम मंदर मारवीजा,जोधपुर से-रेनू लक्ष्मण खियानी,दीपा-भावना बादलानी,अहमदाबाद से [illegible] रश्म-मनोज कलवानी,कामठी से-रवि मूलानी,फैजाबाद से-अनु प्रेमप्रकाशी.

सही हल के लिए आगामी अंक देखें - सही हल भेजने वालो के नाम आगामी अंक मे प्रकाशित किये जाऐगें. सही हल के लिए वर्ग पहेली की छायाप्रति (फोटोकॉपी) करवाकर अथवा इसी पर भरकर ५ अगस्त तक कार्यालय में भिजवायें. प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर - ४७४००१

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-६

(१) स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की पुण्यतिथि कौनसी तारीख में मनाई जा रही है?
उत्तर...

(२) स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के माता-पिता का क्या नाम है?
उत्तर...

(३) स्वामी सर्वानन्द स्मृतिस्थल कहाँ बना हुआ है?
उत्तर...

(४) वह प्रार्थना जो सांई सर्वानन्द जी प्रतिदिन प्रातः आचार्यश्री के समक्ष किया करते थे?
उत्तर...

(५) स्वामी सर्वानन्द बाजार जयपुर में किस कालोनी में बना हुआ है?
उत्तर...

(६) स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज का कौनसा जन्मोत्सव और कब मनाया जा रहा है?
उत्तर...

(७) आचार्यश्री की तृतीय गुरू गद्दी की बागडोर किस महापुरूष ने संभाली?
उत्तर...

(८) स्वामी शांतिप्रकाश पब्लिक स्कूल जयपुर में कौनसी जगह पर है?
उत्तर...

(६) अमरापुर वाणी पुस्तक में कुल कितने भजन संकलित किये गये हैं?
उत्तर...

१०) आचार्यश्री द्वारा रचित पवित्रतम महाग्रंथ का नाम क्या है?
उत्तर...

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-5 के सही उत्तर

१. ब्रह्मनिष्ठ सद्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज का.
२. चालीस दिन का उपवास., ३. चिप्पी व डंडा.
४. गुरूवार व शनिवार., ५. पच्चीस दशपदी.
६. २ जुलाई २००४ शुक्रवार.
७. २८ जून २००४ सोमवार को.
८. तीन पग जमीन., ६. १०८ भजन.
१०.५५ वर्ष तक.

सही उत्तर भेजने वालों के नाम-

जयपुर से-राजेश प्रेमप्रकाशी, अनु प्रेमप्रकाशी, ढालू प्रेमप्रकाशी, जय बाबा प्रेमप्रकाशी, यशिका-सोना बच्चानी, अशोक-सोनिया पुरूस्वानी, राजेश्वरी टिलवानी, मुरलीधर-भावना पारवानी,पिंकी दत्तवानी,गुड़िया-भरत जेठवानी,गीता-प्रदीप जाजानी,अजमेर से-निर्मला हीरानंद,चापा से-वरियलदास प्रेमप्रकाशी,जोधपुर से-रेनू-लक्ष्मण खियानी,दीपा-भावना बादलानी,उल्हासनगर से-श्रीमती राजकुमारी सचदेव,कामठी से-मोहनलाल लालवानी,अहमदाबाद से-श्रीमती रश्मि मनोज कलवानी,गोदिंया से-कु.विद्या रमेश गम्बानी,फैजाबाद से-अनु प्रेमप्रकाशी.

7 जुलाई 2004 शनिवार	हरियाली शनिश्चरी अमावस्या
8 जुलाई 2004 रविवार	अधिकमास, पुरूषोत्तम मास शुरू, चन्द्र दर्शन
1 जुलाई 2004 बुधवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
2 जुलाई 2004 गुरूवार	सद्गुरू टेऊँराम चौथ (मासिक जन्मदिवस)
8 जुलाई 2004 बुधवार	कमला एकादशी व्रत (पुरूषोत्तम-मासीय)
1 जुलाई 2004 शनिवार	श्रावण पूर्णिमा व्रत (पुरूषोत्तम-मासीय)
अगस्त 2004 मंगलवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत (पुरूषोत्तम-मासीय)
1 अगस्त 2004 बुधवार	कमला एकादशी व्रत (पुरूषोत्तम-मासीय)
५ अगस्त 2004 रविवार	श्राद्ध की अमावस्या (पुरूषोत्तम-मासीय), स्वतत्रंता दिवस
6 अगस्त 2004 सोमवार	सोमवती अमावस्या, पुरूषोत्तम-मास विधान पूर्ण, सिंह संक्रांति
7 अगस्त 2004 मंगलवार	चन्द्र दर्शन, सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द वर्सी उत्सव शुरू
9 अगस्त 2004 गुरूवार	हरियाली तीर्थ, विनायक चतुर्थी व्रत
0 अगस्त 2004 शुक्रवार	नाग पचंमी
1 अगस्त 2004 शनिवार	सद्गुरू टेऊँराम चौथ (मासिक जन्मदिवस), सद्गुरू सर्वानन्द पुण्यतिथि, उत्सव समापन
4–25 अग.04 बुध-गुरू	झूलेलाल चालीसा समापन उत्सव
६ अगस्त 2004 गुरूवार	पुत्रदा एकादशी व्रत





श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष



पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का



यात्रा-कार्यक्रम

9 से 14 जुलाई	2004 तक	जाकरता	0062-811902713
15 से 18 जुलाई	2004 तक	बाली	0062-811902713
19 से 21 जुलाई	2004 तक	सिंगापुर	0062-811902713
22 से 26 जुलाई	2004 तक	हांगकांग	00852-27216758
27 जुलाई से 1 अगस्त	2004 तक	जयपुर	0141-2372424,2372423
2 अगस्त से 2 सितम्बर	2004 तक	स्पेन	मो.-0034699-077255
2 अगस्त	2004	मलागा	0034952-386508,मो.-0034699-077255
3 से 5 अगस्त	2004 तक	सॉऊटा	0034956-517722,मो.-0034699-077255
6 अगस्त	2004	लालिनिया(जेब्राल्टर)	मो.-0034699-077255
7 से 8 अगस्त	2004 तक	मलागा	0034952-386508,मो.-0034699-077255
9 से 12 अगस्त	2004 तक	लासपालमास	0034928-469771,मो.-0034699-077255
13 से 16 अगस्त	2004 तक	पलाया डीलिंगलेस	0034928-766437,मो.-0034699-077255
17 से 20 अगस्त	2004 तक	तनरीफ	0034922-226929,मो.-0034699-077255
21 से 23 अगस्त	2004 तक	पलाया जेल अमेरिका	0034922-714675,मो.-0034699-077255
24 से 25 अगस्त	2004 तक	फोर्तेविन्तूरा	0034928-852577,मो.-0034699-077255
26 से 27 अगस्त	2004 तक	लांसरोते	0034928-511823,मो.-0034699-077255
28 से 29 अगस्त	2004 तक	लासपालमास	0034928-469771,मो.-0034699-077255
30 अग. से 2 सितम्बर	2004 तक	मेड्रिड-पम्पलोना	0034914-047510,मो.-0034699-077255
3 सितम्बर से 3 अक्टूबर	2004 तक	अमेरिका	मो.00191720-22606
3 सितम्बर	2004	न्यूयार्क	00171898-77393, मो.00191720-22606
4 से 7 सितम्बर	2004 तक	न्यूजर्सी	00160979-93518, मो.00191720-22606
8 सितम्बर	2004	न्यूयार्क	0071898-77393, मो.0091720-22606
9 से 10 सितम्बर	2004 तक	चिकांगो	00163022-10538, मो.00191720-22606
11 से 12 सितम्बर	2004 तक	टम्पा	00181396-68946, मो.00191720-22606
13 से 15 सितम्बर	2004 तक	एसटी. मार्टिन	0059954-23068, श्री नन्दवानी
16 से 18 सितम्बर	2004 तक	कुरेको	005999-7365385, निशा
19 से 22 सितम्बर	2004 तक	बेलिजी	00501322-964, 3075. विनोद
23 से 25 सितम्बर	2004 तक	फ्रीमोन्ट	0051057-3110, मो.0091720-22606
26 से 27 सितम्बर	2004 तक	लोसएन्जिलस	00181836-63380, मो.00191720-22606
28 सित. से 3 अक्टूबर	2004 तक	न्यूयार्क	00171866-78864, मो.00191720-22606

समर्पण से कल्याण

यह संसार तो एक सपना है , जो जन्म के साथ चलना शुरू होता है और मृत्यु के साथ समाप्त हो जाता है. यहां की यादें, स्मृतियां, सम्बन्ध स्थितियां-परिस्थितियां, सभी पदार्थ, धन-दौलत, वैभव-व्यवसाय-गाड़ियां, बंगले, भरी अलमारियां-सम्पदाओं के भण्डार, सुख-सुविधाओं के अम्बार, सभी का सभी कुछ-यहीं रह जाता है. जो आया है, सो जायेगा- क्या राजा, रंक, फकीर-कह गये संत कबीर-पूर्णतया सत्य है. कहीं भी, किसी की कोई पेश नहीं जाती. लोग दुर्घटनाओं (भूकम्पों,बाढ़ों,चक्रावकों,रेल,हवाई जहाज,समुद्री जहाजों व सड़क दुर्घटनाओं आदि से मरते हैं) रोगों, भूख, सर्दी-गर्मी और सदमों से भी मरते हैं. जैसे मृत्यु निश्चित है वैसे ही मरने के बाद इस जग का कुछ भी साथ न जाना भी निश्चित है. और तो और यहा इसी जन्म में ही अनेकों सम्बन्ध और सम्बन्धी हमारे सामने ही टूटते, छूटते-विसरते जाते हैं. परिस्थितियां भी स्थिर नहीं रहतीं, व्यवहार भी बदल जाते हैं, विचार-भाव तो पल-पल बदलते ही हैं फिर नाना पदार्थ और उनके सुख भी बदलते ही रहते हैं. देखते ही देखते हमारा बचपन हमसे बिछुड़ जाता है, एक दिन जवानी भी नहीं रहती और फिर अपने संग ले जाने के लिए बुढ़ापा आ जाता है, हम न न करते रहते हैं और सहारों के बूतों पर उसमें भी घिसढ़ने के उपक्रम करते रहते हैं और जब बुढ़ापे की हर सांस कराहटों और कड़वाहटों में चारों खाने चित करने लगती है, अपने ही जाये जन्में अवहेलना करने लगते हैं, जब अपनी ही सामर्थ व शरदा (हिम्मत) दम तोड़ने लगती है, जब अपने ही सब, अपने ही घर के किसी कोने में दरवाजे के पास, दान करने लायक खाट व बिस्तर पर डाल देते हैं और समय मिल जाये तो दवा-पानी पूछने की कृपा करने लगते हैं तब जीव स्वयं ही मृत्यु पर टकटकी लगा कर उसके आने की इन्तजार करने लगता है. मृत्यु अवश्य आती है- आ भी जाती है- अकेले ही जाना पड़ता है. न कुछ लिया-दिया, न किया-कराया, न कमाया-बनाया, सब छलावे-दिखावे, सब...सब...सब.. सब कुछ, सभी का सब कुछ-यहीं का यहीं रह जाता है- साथ जाते है संस्कार, कर्म व प्रारब्ध.

हे प्राणी! इस सब कुछ में से जो आज तेरे पास है और दूसरों से ही तेरे पास आया है- कल कुछ भी तेरे साथ नहीं जाना. इसने तेरे जीते जी तेरी असमर्थताओं में दूसरों के पास जाना प्रारम्भ कर देना है और तेरी आंखें बन्द होते ही तेरा इन सब से सभी प्रकार का नाता टूट ही जाना है. तूने स्वयं ही, मृत्यु के समय ऐसे चले जाना है- जैसे इनमें तेरा अपना तो कुछ है भी नहीं. तो फिर एक काम अभी से करना शुरू कर दो. सभी से प्यार करो और यथा शक्ति सभी की मदद करो. जरूरत मन्दों की मदद करो और नित्य करते ही रहो. भला कर भला होगा-यही सौदा कर नफा होगा

गरीबों के उत्थान के लिये, उनके अभावों, कमियों और जरूरतों को पूरा करने में, उनकी पढ़ाई-लिखाई कराकर उन्हें किसी लायक बनाने के लिये उनकी दुःख-दरिद्रता और बीमारियों को दूर करने के लिये जी जान से जुट जाओ.

मित्रों! आप सभी सामर्थवान हैं- फलों से लदे वृक्षों के समान हैं-आपको दुखियों के दुःख दूर करने में, समाज को ऊँचा उठाने में, सभी की सामर्थ को बढ़ाने में, देश की छवि सुधारने में, मानव मात्र के कल्याण के लिये, विश्व-एकता, विश्व-बन्धुत्व व विश्व-शान्ति के लिये एक जुट होकर, दृढ़ संकल्प होकर, पूर्ण श्रद्धा व समर्पित भाव से काम करना चाहिये. पाने से अधिक सुख देने में है, खाने से अधिक सुख खिलाने में है- त्याग व परोपकार में है. अपनी सामर्थ को देखिये और आगे आइये और यथा शक्ति सेवा, परोपकार व मैत्री के मार्ग पर निकल पड़िये. ईश्वर के बनाये हुए जीवों की सेवा भी ईश्वर की ही सेवा है.

इस मानुष जीवन का लक्ष्य तो मन की शान्ति है-प्रभु की प्राप्ति है- जो कि अहिंसा, सेवा, त्याग, परोपकार व मैत्री से ही सम्भव है तथा एकता अखण्डता व बन्धुत्व की भावनाओं के विकास से सम्भव है और इन सब से सम्भव है मन की शान्ति (आन्तरिक-शान्ति), पारिवारिक-शान्ति, सामाजिक-शान्ति, राष्ट्रीय-शांति व विश्व-शांति.

–डॉ. एस.एल. ग्रोवर, जयपुर

डाक रजि. ग्वालियर संभाग - 161/2002-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा. श[illegible]9/18/81-II

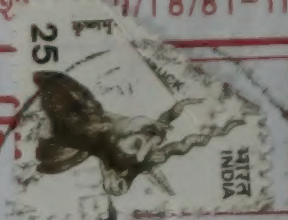
एक सच्ची घटना — पाप का धन

बम्बई में अशरफ भाई नामक जवाहरातका एक दलाल था. बहुत ही नेक और मेहनती. स्वयं धनवान् नहीं था, परंतु व्यापारियों का उस पर पूर्ण विश्वास था; इसलिये वे बहुत रूपयों का माल उसे सौंप देते थे. एक बार एक सेठ के यहां कुछ हीरों की खरीददारी हुई. अशरफ भाई ने उसकी पसंदगी के लिये एक पुड़िया दी. गलती से उसके साथ एक पुड़िया और चली गयी, जिसमें १५ बेशकीमती नीले हीरे थे. दूसरे दिन रात में जब वह खोजने लगा, तब उसे वह पुड़िया याद आयी और वह दौड़ा हुआ सेठ के घर गया. सेठ ने अलमारी से पुड़िया निकालकर दिखायी और कहा कि 'उसके सिवा उसे और कुछ नहीं मिला है.' अशरफ बहुत गमगीन होकर हीरों के मालिक के पास पहुंचा और सारी बात ब्योरेवार बतायी. जौहरी उसकी ईमानदारी के बारे में बहुत दिनों से जानता था, इसलिये ढाढ़स बंधाते हुए कहने लगा-'घबराने की कोई बात नहीं है, कहीं इधर-उधर रखकर भूल गये होंगे-मिल जायगी.' दस-पांच दिन में भी जब कुछ पता नहीं चला, तब वह फिर जौहरी के पास गया और कहा कि 'मैं जानता हूं, इस समय उन हीरों की कीमत इतनी अधिक है कि उसे चुकाना मेरे वशकी बात नहीं है. बड़ी कृपा होगी, यदि आप उनकी लागत कीमत मुझसे ले लें. मैं अधिकांश तो अभी दे दूंगा, बाकी के लिये रूक्का लिख दूंगा.' दूसरे दिन वह फिर सेठ के यहां गया और उसका पैर पकड़कर रोने लगा कि 'मैं बाल-बच्चेवाला आदमी हूं- वे सब बर्बाद हो जायंगे. आइन्दा कौन मेरा विश्वास करेगा? कौन मुझे जवाहरात सौंपेगा ? मेरा तो धंधा ही चौपट हो जायेगा. ऐसा लगता है, आप हीरे कहीं रखकर भूल गये हैं, एक बार फिर देख लें.' उस दिन सेठ ने उसे बुरा-भला कहकर घर से निकाल दिया. इसके बाद अशरफ को इतना बड़ा सदमा पहुंचा कि वह विक्षिप्त-सा रहने लगा. कभी-कभी रात में चौंककर उठ जाता और रोने लग जाता. पत्नीके बार-बार कहने पर मन को कड़ा करके, फिर कुछ दिनों बाद एक दूसरे प्रतिष्ठित व्यक्ति के साथ उस सेठ के पास गया और उनके समझाने-बुझाने पर उन दोनों ने एक पंच मान लिया. पंच के सामने अशरफ ने अपनी बात रखी कि 'जिस दिन मैं सेठजी के पास हीरे रखकर गया था, उस दिन और कहीं नहीं गया. इसलिये मेरी पुड़िया उस हीरोंवाली पहली पुड़िया के साथ में भूल से इन्हीं के पास आयी है.' प्रत्यक्ष प्रमाण पूछने पर उसने 'ना' कह दी और बताया कि 'न तो मेरे पास कोई प्रत्यक्ष गवाह है और न मैंने इन्हें अपनी जानकारी में पुड़िया ही दी थी.' उधर सेठ ने अपने जवान लड़के के सिर पर हाथ रखकर सौगंध खायी कि 'मेरे पास इसकी कोई दूसरी पुड़िया नहीं आयी थी.' फैसला अशरफ के विरूद्ध हो गया. अचानक अशरफ सेठ के पैरों पड़ गया और कहने लगा-'यह आपने क्या किया? आपका चेहरा बताता है कि हीरे आपके पास हैं. क्यों ! आपने इकलौते जवान बेटे के सिरपर हाथ रखकर इतनी बड़ी सौगंध खायी. भगवान का दिया आपके पास सब कुछ है.' इसके बाद रोता-बिलखता वह वापस अपने घर आ गया.

संयोग से तीन-चार दिनों बाद ही सेठ के लड़के को (मैनेनजाइटीज) गर्दनतोड़ बुखार हो गया और वह दूसरे दिन ही चल बसा. उस घर में तो शोक हुआ ही, परंतु अशरफ भी दुखी होकर रोने लगा कि उसके कारण से यह संयोग बना. दो-तीन दिन बाद सेठ हीरे की पुड़िया लेकर अशरफ के पास आया और उसके गले लगकर बिलख-बिलखकर कहने लगा- 'अशरफ भाई! मेरे मन में लालच समा गया और मैंने बेटे से अधिक धन को तौला. किंतु, भगवान के घर में देर है, अंधेर नहीं. मेरी पत्नी कहती है कि मेरे ही पापाचार ने बेटे के प्राण ले लिये.' ◆

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रेम प्रकाश संदेश कार्यालय से सज्जाकर रवि ऑफसेट, कम्पू, से मुद्रित करवाकर कार्यालयः स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश्कर, ग्वालियर से प्रकाशित किया गया ।
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 0751-2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 0751-2454183

सूचना



समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह जाँचकर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए

– व्यवस्थापक

सदस्यता क्रमांक

श्रीमान्

RH-4832-15060-7/2004
SHRI KISHANCHAND BOOTANI
E-19, MADHUVAN COLONY,
NAKA MADAR, AJMER (RAJ)